भारत के सुदृढ़ भविष्य के लिए

MIDHANI

संकल्प

मिधानि की छहमाही राजभाषा गृह पत्रिका

ई-पत्रिका अंक 5 | अप्रैल 2022 -सितंबर 2022 | वर्ष 14, अंक 25

मिश्र धातु निगम लिमिटेड

MISHRA DHATU NIGAM LIMITED

हम हर जगह हैं मौजूद, समुद्र की गहराई से अंतरिक्ष की ऊंचाई तक

हर घर तिरंगा

मिश्र धातु निगम लिमिटेड, हैदराबाद (मिधानि), में दि. 03.08.2022 को आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत भारत सरकार की अभूतपूर्व पहल 'हर घर तिरंगा' कार्यक्रम की शुरुआत की गई। कार्यक्रम का केंद्रीय विषय 13 से 15 अगस्त 2022 के दौरान प्रत्येक भारतीय को अपने घर पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने के लिए प्रेरित करना और नागरिकों के दिलों में देशभक्ति की भावना को जगाना तथा हमारे राष्ट्रीय ध्वज के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देना है। कार्यक्रम के भाग के रूप में मिधानि प्रबंधन की ओर से उद्यम के प्रत्येक कर्मचारी को एक राष्ट्रीय ध्वज दिया गया। उन्हें यह निर्देश भी दिए गए कि वे अपने घर पर भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराएँ।

डॉ. संजय कुमार झा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, मिधानि तिरंगा झंडे का वितरण करते हुए।

संकल्प

मिधानि की छहमाही राजभाषा गृह पत्रिका
वर्ष-14, अंक – 25 | अप्रैल ' 22– सितंबर ' 22 | ई-पत्रिका अंक 5

संपादक मंडल

प्रधान संरक्षक
डॉ संजय कुमार झा
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

सरंक्षक
श्री एन गौरी शंकर राव
निदेशक (वित्त)

श्री टी मुत्तुकुमार
निदेशक (उत्पादन एवं विपणन)

परामर्शदाता
श्री रामकृष्ण राव
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादन व डिजाइनिंग
डॉ बी बालाजी
उप प्रबंधक
हिंदी अनुभाग एवं निगम संचार तथा सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

संपादन सहयोग
श्रीमती डी. वी. रत्न कुमारी
वरिष्ठ कार्यालय अधीक्षक

श्री वासुदेव
सहायक (हिंदी अनुवादक)

संपर्क पता
संपादक 'संकल्प'
मिश्र धातु निगम लिमिटेड,
कंचनबाग, हैदराबाद-500 058
ई-मेलः b.balaji@midhani-india.in
टेलीफोन: 040-24184325, 4298
(मो) 8500920391

पत्रिका केवल आंतरिक वितरण एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए निःशुल्क है। पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे संपादक मंडल या मिधानि प्रबंधन का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

संदेश – 2-9
संपादकीय - 10
राजभाषा
- 'नई शिक्षा नीति : मातृभाषा और राजभाषा' विषय पर व्याख्यान की रिपोर्ट / 11
- विज्ञान के क्षेत्र में हिंदी का प्रसार आवश्यक है - डॉ. संजय कुमार झा / 17

पुरस्कृत निबंध
- प्रौद्योगिकी तथा प्रबंधन में नैतिकता एवं मूल्य- पीयूष पालिवाल / 20
- नैतिकता मानव के जीवन का आधार – उमेंद्र सिंह / 27

स्वास्थ्य
- सूर्य नमस्कार एक, लाभ अनेक- अनूप कुमार मंडल / 30
- योग माह की रिपोर्ट / 39

कहानी
- सेवा-भाव - रणजीत सिंह / 43

कविता
- कोरोना – हाय तोबा – रोहित निगुडकर / 44

मिधानि की विविध गतिविधियाँ

16 लाभांश का भुगतान

22 मिधानि प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का उद्घाटन

26 मिधानि और भारतीय वायु सेना के बीच समझौता ज्ञापन

26 मिधानि में मध्य-प्रबंधन के लिए कैरियर विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम

27 मिधानि में ईसीएस शेड का विस्तार

29 मिधानि में वैक्यूम प्रौद्योगिकी और अनुरक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

41 अमृत महोत्सव के अंतर्गत कोविड टीकाकरण का शिविर आयोजित

42 मिधानि में बीएलएस (बेसिक लाइफ सपोर्ट)" प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न

42 मिधानि ने रवाना किए जेके पुलिस को बीआर वाहन

45-48 चित्र दीर्घा – हिंदी दिवस-पुरस्कार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

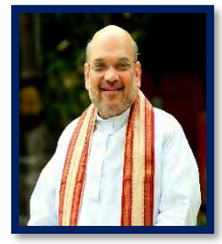

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। देश की भाषाई संपन्नता को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने भारत के संविधान में भाषाओं के लिए अलग से आठवीं अनुसूची का प्रावधान किया जिसमें प्रारंभ में 14 भाषाएं रखी गयी थीं और अब इस अनुसूची में कुल 22 भाषाएं सम्मिलित हैं। भारत की सभी भाषाएं महात्वपूर्ण हैं और अपना समृद्ध इतिहास भी रखती हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया हैं। यही कारण हैं कि आजादी के आंदोलन में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को संपर्क भाषा बनाकर आंदोलन को गति प्रदान की। ' स्वराज ' प्राप्ति के हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में स्वभाषा का आन्दोलन निहित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी की महती भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संध की राजभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि को अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश दिए गए हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की प्ररणादायक नेतृत्व में आज जब पूरा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और प्रत्येक श्रेत्र में हम नई ऊर्जा के साथ नये संकल्प ले रहे हैं, ऐसे में यह सामूहित प्रयास होना चाहिए कि राजभाषा हिंदी हो लेकर संविधान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए।

किसी लोकतांत्रिक देश में सरकारी कामकाज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने में आसान हो, ज्यादा से ज्यादा लोग उसे समझते हों और जनसामान्य में लोकप्रिय हो। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके साथ ही राजभाषा हिंदी में आवश्यकता के अनुसार शब्दावली निर्माण, वर्तनी के मानकीकरण किए गए और सरकारी कार्यालयों में हिंदी को बढ़वा देने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाई गई। राजभाषा की इस विकास यात्रा में हमने कई लक्ष्य' प्राप्त किए हैं लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना शोष हैं। विगत तीन वर्षों से प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने के लिए गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयासरत है जिससे विभिन्न मंत्रालयों / विभागों में हिंदी का काम -काज तेजी से बढ़ा है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि वर्तमान में गृह मंत्रालय से ज़्यादातर कार्य हिंदी में किया जाता है तथा कई अन्य मंत्रालयों में माननीय मंत्री भी अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिंदी में करते हैं।

राजभाषा कार्यान्वथन की गति तीव करने और समय समय पर किए गए कार्यों की समीक्षा हेतु मई। 2019 में नई सरकार के गठन के पशचात 57 मंतर्रालयों में से 53 में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है तथा निरंतर बैठकें आयोजित की जा रही हैं। देश भर में विभिन्न शहरों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से अब तक कुल 527 नगर राजभाषा कार्यानन्वथन समितियों का गठन किया जा चुका है। विदेशों में लंदन, सिंगापूर,फिजी, दुबई और पोर्ट लुई में भी नगर राजजभाषा कार्यान्वथन समितियों का गठन किया किया गया हैं। राजभाषा कार्यान्वदन को और मजबूत करने की दिशा में संसदीय राजभाषा समिति अपनी सिफारिशों के दस खंड माननीय राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत कर चुकी है तथा 11 वा खंद्र शीध्र ही सौपा जा रहा हैं।

राजभाषा विभाग सूचना द्वारा 13-14 नवंबर,2021 को बनारर‍ा में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा नई दिल्ली में केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए पहला तकनीकी सम्मेलन आयोजित किया गया । इन कार्यक्रमों से हिंदी' प्रेगोयों के उत्साह में अपार वृद्धि हुई हैं। यह और भी सुखद है कि हिंदी दिवस-2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन गुजरात के सूरत शहर में हो रहा हैं।

गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगागी प्रयोग की दिशा में निरंतर प्रत्याशील हैं। राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित' अनुवाद प्रणाली ' कठस्थ' का निर्माण और विकास किया है जिसमें आज लगभग 22 लाख वाक्य शामिल किए जा चुके हैं। इस दूल का प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति इवान गुनवाता बढ़ाई गई हैं। राजभाषा विभाग द्वारा जन साधारण के लिए **"लीला हिंदी प्रवाह "** मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसे अपनाकर 14 विभिन्न भाषा -भाषी अपनी-अपनी मातृभाषाओं से नि:शुल्क हिंदी सीख सकते हैं। राजभाषा विभाग के 'ई-महाशब्दकोश' में 90 हजार शब्द सम्मिलित किए गए है और 'ई-सरल' हिंदी वाक्यकोश में 9 हजार वाक्य शामिल हैं।

माननीय प्रथानमंत्री सरी नरेंद्र मोदी जे के नेतृत्व में देश को नई शिक्षा नीति मिली जिसमें मातृभाषा में शिक्षा देने को प्राथमिकता दी जा रही । राजभाषा विभाग ने अमृत महोत्सवा के अवसर पर विधि. तकनीकी, स्वारथ्य, पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि साहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए हिंदी से हिंदी **"बहुत शब्दकोश** " के निर्माण पर भी काम शुरु किया है और सुलभ संदर्भ के लिए एक अच्छे शब्दकोश का सुजन किया जा रहा हैं। इस तरह की उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण, अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्रहण करने में भाषा की जानकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी।

हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता की अविरल धारा हमारी भाषाओं संस्कृति और लोकजीवन में सुरक्षित रही हैं । भारत में स्थानीय भाषाओं का योगदान हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए अतुलनीय रहा है। इन भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है हिंदी उन समरात भारतीय भाषाओं की मूल परंपरा से है जो इस देश की मिट्टी से उपजी हैं, यही पुष्पित पल्लवित हुई हैं और जिन्होंने अपनी शब्द संपदा भाव संपदा, रूप, शैली और

अपने पदों से हिंदी को लगातार समृद्ध किया हैं। **राजभाषा हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी हैं और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे के परस्पर सहोग से ही संभाव हैं।**

प्रिय देशावासियों ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर में आप सभी का आहान करता हूँ कि आप और हम मिलकर यह संकल्प लें कि अपनी भाषाओं पर गर्व की अनुभूति करेंगे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी देशा -विदेश के मंचों पर हिंदी में उद्बोधन देते है जिससे सभी हिंदी प्रेगोयों में उत्साह का संचार होता हैं। आजादी के 75 वर्ष पूर्णा हो चूके हैं और माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रतिभाशाली नेतृत्व में आने वाले 25 वर्षों को देश में अमृतकाल के रूप में मनाया जा रहा है। ऐसे में भाषाई समरसता को ध्यान में रखते हुए हिंदी तथा हमारी सभी भारतीय भारताओं का विकास अत्यंत आवश्यक हैं।

आइये, आज संकल्प लें कि अपने दैनिक कार्यों में, कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक काम हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में करके दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तथा संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करेंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुन :मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद!

नई दिल्ली
14 सितंबर 2022

(अमित शाह)

राजनाथ सिंह
रक्षा मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

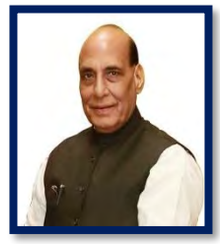

संदेश

जैसा कि विदित है, हमारे संविधान निर्माताओं ने 14 सितंबर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया । तब से प्रतिवर्ष 14 सिंतबर का दिन 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

उल्लेखनीय है कि 15 अगस्त, 2021 को आजादी की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर आजादी का अमृत महोत्सवा पूरे देश में जन- भागीदारी के माध्यम से मनाया जा रहा है। यह महोत्सव मोतस्वा भारत सरकार द्वारा मनाए जाने वाले कार्यक्रमों की एक शृंखला है जो कि दिनांक 12 मार्च 2021 से प्रारांभ हो चुकी है और 15 अगस्त, 2023 तक अलग -अलग कार्यक्रमों और समारोहों के माध्यम से पूरे देश में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इस अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर हिंदी दिवस का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है।

भारत विविधताओं वाला देश है। हमारे देश में अनेक भाषाएं बोली जाती हैं। तथापि, अपनी सरलता, सुबोधता और पहुंच के कारण - हिंदी ने भारत की राजभाषा बनने का गौरव प्राप्त किया । स्वतंत्रता संग्रम के दौरान और इसके बाद हिंदी ने हमारे राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोया तथा विविधता में एकता की भावना को मजबूत बनाए रखा हैं।

हिंदी भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। आत्मनिर्भर भारत को लेकर सरकार द्वारा चलाई जाने वाली योजनाओं और कार्यक्रमों के लाभों के बारे में जनता को उनकी भाषा में अधिक प्रभावी ढंग से जानकारी दी जा सकती हैं।

मुझे यह जानकार हर्ष हो रहा है कि इस वर्ष भी रक्षा मंत्रालय सैन्य कार्य विभाग एवं अन्य सभी रक्षा-सेवा संगठनों में हिंदी पखवाड़े का आयोजन मानक दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए किया जा रहा है। मै, रक्षा मंत्रालय, सैन्य कार्य विभाग एवं सभी रक्षा अंतर-सेवा संगठनों के देश भर में फैले विभिन्न कार्यालयों में कार्यरत अधिकारियों/ कर्मचारियों से अपील करता हूँ कि वे अपना अधिक-से- अधिक सरकारी काम -काज राजभाषा हिंदी में करते हुए संवैधानिक अपेक्षा का अनुपाल्न सुनिश्चित करें ।

" जय हिंद "

स्थान नई दिल्ली

दिनांक :03, सितम्बर, 2021

(राजनाथ सिंह)

शुभकामना संदेश

प्रधान संरक्षक की कलम से...

डॉ. संजय कुमार झा
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
मिश्र धातु निगम लिमिटेड
कंचनबाग, हैदराबाद-500 058
फोन नं.-040-24184501
ई-मेलः cmd@midhani-india.in

नमस्कार मित्रो,

जैसा कि आप सभी को ज्ञात है कि मिधानि अपने 50 वर्षों की स्वर्णिम यात्रा को पूर्ण करने वाला है। इस अवसर को अविस्मरणीय बनाने के लिए आप सभी के सहयोग की अपेक्षा है। यह आप सभी के सामूहिक प्रयासों और अथक परिश्रम का ही परिणाम है जिसके कारण आज मिधानि 'आत्मनिर्भर भारत' के सपने को साकार करने की तरफ तेजी से आगे बढ़ रहा है।

यह आत्मनिर्भरता सिर्फ मिधानि के उत्पादों तक ही सीमित नहीं है। हमने राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में भी आत्मनिर्भरता प्राप्त की है। 'संकल्प' का यह अंक भी उसी आत्मनिर्भरता की एक बानगी है। 'संकल्प' के इस अंक की रचनाओं और मिधानि की विविध गतिविधियों की सूचनाएँ हिंदी में पढ़ने के उपरांत आप अपने साथी कर्मचारियों व हिंदी अनुभाग के हिंदी के प्रति समर्पण को महसूस करेंगे। इस पत्रिका के माध्यम से मिधानि प्रबंधन की हिंदी कार्यान्वयन के प्रति प्रतिबद्धता सहजता से प्रकट होती है।

'संकल्प' के इस अंक के माध्यम से आप सब में हिंदी के प्रति रुचि और समर्पण बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। अपनी रचनाओं से पत्रिका को सहयोग करने वाले सभी रचनाकारों, उद्यम में राजभाषा के प्रति एक सकारात्मक वातावरण विकसित करने के लिए हिंदी अनुभाग और पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मंडल को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

(डॉ. संजय कुमार झा)

शुभकामना संदेश

संरक्षक की कलम से...

श्री एन गौरी शंकर राव
निदेशक (वित्त)
मिश्र धातु निगम लिमिटेड
कंचनबाग, हैदराबाद-500 058
फोन नं.-040-24184519
ई-मेलः df@midhani-india.in

नमस्कार मित्रो

भाषा एवं संस्कृति ऐसे प्रमुख माध्यम होते हैं, जिससे किसी राष्ट्र की शक्ति का आसानी से अनुमान लगाया जा सकता है। भाषायी एवं सांस्कृतिक रूप से भारत एक बेहद समृद्ध राष्ट्र है। भारत की भाषाएं अलग-अलग सामाजिक अस्मिताओं के प्रकटीकरण का माध्यम होने के साथ-साथ सांस्कृतिक रूप से भी सभी एक-दूसरे की ताकत हैं। भाषाओं के इस विविधतापूर्ण परिवेश में हिंदी का एक विशिष्ट स्थान है, जिस कारण संविधान सभा ने सर्वसम्मति से इसे अपनी राजभाषा के रूप में स्वीकृत किया।

राजभाषा को कार्यालयी कामकाज में रुचिकर और सुगम बनाने के लिए राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित सभी योजनाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों को मिधानि में नियमित रूप से लागू किया जाता है। इसके अतिरिक्त, मिधानि प्रबंधन ने अपनी तरफ से कई ऐसी योजनाओं का कार्यान्वयन किया है जो हमारे उद्यम में राजभाषा के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। हमारी गृह पत्रिका 'संकल्प' भी उद्यम में राजभाषा के प्रचार-प्रसार का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। आप सभी के सहयोग से 'संकल्प' का नवीनतम अंक आपके ज्ञानवर्धन के लिए पुन: प्रस्तुत है।

'संकल्प' पत्रिका की नियमितता बनाए रखने तथा इसके आगामी अंकों को अधिकाधिक रुचिकर बनाने हेतु आपके बहुमूल्य विचारों और सुझावों का स्वागत है। पत्रिका अनवरत इसी प्रकार आकर्षक रूप में हमारे बीच आती रहे तथा राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सदैव सफलता प्राप्त करे, इसके लिए सभी लेखकों और संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

(एन गौरी शंकर राव)

शुभकामना संदेश

संरक्षक की कलम से...

श्री टी. मुत्तुकुमार
निदेशक (उत्पादन एवं विपणन)
मिश्र धातु निगम लिमिटेड
कंचनबाग, हैदराबाद-500 058
फोन नं.-040-24184242
ई-मेलः dpm@midhani-india.in

नमस्कार मित्रो,

मिधानि की राजभाषा में प्रकाशित होने वाली गृह पत्रिका संकल्प के माध्यम से आप सभी से बात करने का अवसर पाकर मुझे बड़ी खुशी हो रही है। मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि मिधानि में हिंदी के लिए बहुत अच्छा वातावरण है। मुझे यह भी पता चला कि इसके लिए मिधानि की गृह पत्रिका संकल्प ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई है।

किसी भी राष्ट्र की उन्नति में भाषा एक महत्वपूर्ण कारक होती है। हमने हिंदी को सर्वसम्मति से संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया है। भाषा के माध्यम से कोई राष्ट्र उन्नति के पथ पर तभी आगे जा सकता है जब हम सभी उस भाषा का अपने कार्यालयीन कार्यों में अधिक-से-अधिक प्रयोग करें। केंद्रीय सरकारी-क्षेत्र के कार्यालयों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपने कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा का अधिकतम प्रयोग करें और उसका प्रचार-प्रसार भी करें ताकि हिंदी देश में राजभाषा के रूप में पूर्णतः स्थापित हो सके।

आप जानते ही हैं कि मिधानि की अर्धशतकीय पारी अर्थात 50 वर्ष पूरे होने वाले हैं। किसी भी संगठन के लिए 50 वर्षों की अवधि पूरा करना बहुत बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है। मिधानि ने भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए काफी संघर्ष किया है। इस संघर्ष में आप सभी ने समर्पण के साथ काम किया है। मैं संकल्प के माध्यम से आप सभी से अपील करता हूँ कि मिधानि के विकास में आप सभी इसी तरह सहयोग प्रदान करेंगे और इसकी नई उपलब्धियों में सक्रिय रूप से भागीदार बनेंगे।

मैं आशा करता हूँ कि विगत अंकों की तरह 'संकल्प' का यह अंक भी आप सभी को पसंद आएगा। इस अंक की सफलता के लिए सभी रचनाकारों और संपादक मंडल को शुभकामनाएँ।

(टी. मुत्तुकुमार)

शुभकामना संदेश

परामर्शदाता की कलम से...

नमस्कार दोस्तो !

मिधानि अपने 50 वर्ष के पायदान पर आगे बढ़ रही है। इस अवसर पर मैं व्यक्तिशः मिधानि के डॉ संजय कुमार झा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री एन गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त) और श्री टी मुत्तुकुमार, निदेशक (उत्पादन एवं विपणन), तथा सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को शुभकामनाएँ देता हूँ।

मुझे यह बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि मिधानि द्वारा राजभाषा गृह पत्रिका " संकल्प " का नियमित अवधि पर प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका में मिधानि की उपलब्धियों और विशेष गतिविधियों के अलावा कर्मचारियों द्वारा हिंदी में लिखे विविध लेख, कहानी, कविता आदि प्रकाशित कर हम हिंदी में लेखन को बढ़ावा दे रहे हैं।

सरकारी काम-काज की भाषा के रूप में हिंदी की संभावनाएं बढ़ती जा रही हैं। मिधानि में हिंदी को राजभाषा के रूप में शत-प्रतिशत क्रियान्वित करने के लिए ठोस प्रयास किए जा रहे हैं। सरकारी कामकाज में अंग्रेजी की जगह हिंदी को लाना कठिन अवश्य हो सकता है किंतु मेरे विचार से यह असंभव नहीं है।

मिधानि में हिंदी के लिए अनुकूल महौल बनाए रखने का निरंतर प्रयास किया जाता है। प्रबंधन द्वारा किए जा रहे प्रयासों के कारण कार्यालय में हिंदी के लिए सकारात्मक वातावरण निर्मित हुआ है। निःसंदेह इसमें हिंदी विभाग की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

हमने राजभाषा के कार्यान्वयन के लिए निर्धारित किए गए सभी लक्ष्यों को प्राप्त किया है और लक्ष्य से आगे बढ़कर कार्य करने के लिए भी हमारे सभी कर्मचारी प्रयासरत हैं। इन्हीं प्रयासों की एक झलक हमारी गृह पत्रिका 'संकल्प' के इस अंक में देखने को मिलेगी।

जय हिंद ! जय हिंदी!!

(ए रामकृष्ण राव)

श्री ए रामकृष्ण राव
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)
मिश्र धातु निगम लिमिटेड
कंचनबाग, हैदराबाद-500 058
फोन नं.-040-24184585
ई-मेलः ramakrishna@midhani-india.in

संपादकीय

हिंदी में काम करना, आदत में शुमार होना जरूरी है

हाल ही में भारत के पूर्व प्रधान मंत्री अटल बिहारी बाजपेयी से संबंधित एक संस्मरण पढ़ने का मौका मिला। संस्मरण के लेखक डॉ. सुरेश अवस्थी ने लिखा है कि अटल बिहारी बाजपेयी जी कानपुर विद्या मंदिर महाविद्यालय के 50वें स्थापना दिवस समारोह में सम्मिलित हुए थे। पत्रकारों से वार्ता में उन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के सवाल पर साफ तौर से कहा था कि 'हिंदी राष्ट्रभाषा बनेगी, प्रतीक्षा कीजिए। हिंदी पर गर्व करना सीखिए और सिखाइए।' इस संस्मरण की अवधि लगभग 1995 की है। उस समय वे भारत के प्रधान मंत्री नहीं बने थे। उन्होंने एक सूत्र बताया है कि देश में हिंदी के पैर मजबूत करने के लिए सर्वप्रथम तो इस भाषा पर गर्व करना सीखना होगा और अन्य व्यक्तियों – अपने मित्रों, सह कर्मियों, रिश्तेदारों, परिचितों और संपर्क में आने वाले हर एक व्यक्ति के मन में इस भाषा के प्रति आकर्षण, लगाव, प्रेम, अनुराग और सम्मान जागृत करने का निरंतर प्रयास करते रहना होगा। कुछ संदर्भों में हो सकता है लोग ऐसा करने वाले को सनकी कहे, पागल कहे, अति उत्साही कहे, आदि। अस्तु।

हिंदी के सार्थक प्रसार के लिए इसकी उपयोगिता और महत्व को बढ़ाने की आवश्यकता है। सरकारी कार्यालयों में यह कार्य कर्मचारियों व अधिकारियों को राजभाषा संबंधी अधिनियम व नियम की जानकारी यदा-कदा देते रहने मात्र से वांछित परिणाम नहीं मिल सकते। यह कार्य निरंतर करते रहना होगा। वर्षों की आदत को चंद दिनों में बदलना एक कठिन कार्य है। कर्मचारियों को इसकी जिम्मेदारी लेनी होगी कि वे अपने कार्यों में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करेंगे और अपने साथी कर्मियों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करते रहेंगे। जब तक हिंदी में काम करने की आदत नहीं बनेगी तब तक प्रेरणा और प्रोत्साहन के माध्यम से हिंदी का प्रचार-प्रसार जारी रखना बेहद जरूरी है।

हिंदी अनुभाग की कोशिश रहती है कि हिंदी में कार्यालय का कामकाज करने में आने वाली बाधाओं के समाधान बताकर कर्मचारियों के लिए हिंदी को सहज बनाए। उनमें हिंदी के प्रति रुचि जगाए। इस कार्य हेतु ही हिंदी दिवस के अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं। हिंदी में नियमित रूप से काम करने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिए जाते हैं। मिधानि में वर्ष 2021-22 में 50 कार्मिकों को प्रोत्साहन पुरस्कारों से सम्मानित होने का अवसर प्राप्त हुआ था।

मिधानि की राजभाषा गृह पत्रिका 'संकल्प' में प्रकाशनार्थ आलेख देने वाले कार्मिकों को प्रोत्साहन स्वरूप मानदेय भी दिया जा रहा है। मिधानि प्रबंधन हिंदी के प्रचार-प्रसार में हर संभव प्रयास के लिए प्रतिबद्ध है। योग्य कर्मियों को हिंदी भाषा व शब्द संसाधन का प्रशिक्षण नियमित रूप से दिया जा रहा है। हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान के प्रतिशत के आधार पर मिधानि का नाम भारत के गजट में अधिसूचित किया जा चुका है। अतः मिधानि के प्रबंधन के साथ-साथ कर्मियों की जिम्मेदारी है कि वे इसे बनाए रखे और राजभाषा संबंधी अपने दायित्व का निर्वाह करें। आशा की जानी चाहिए कि आने वाले समय में मिधानि में राजभाषा हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ेगा।

(डॉ. बी. बालाजी)

'नई शिक्षा नीति : मातृभाषा और राजभाषा' विषय पर व्याख्यान आयोजित

दि. 08.12.2022 को मिश्र धातु निगम लिमिटेड (मिधानि) के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. संजय कुमार झा की अध्यक्षता में "नई शिक्षा नीति : मातृभाषा और राजभाषा" विषय पर व्याख्यान संपन्न हुआ। अध्यक्षीय भाषण में डॉ. संजय कुमार झा ने कहा कि आरंभिक शिक्षा मातृभाषा में करने के बाद विद्यार्थी को उच्च शिक्षा के लिए अंग्रेजी भाषा में पढ़ाई करना काफी कष्टकर होता है। वह मेहनत से अंग्रेजी सीखता है और फिर जब वह केंद्र सरकार के कार्यालय में काम करने आता है तो उसे राजभाषा हिंदी में काम करने की आवश्यकता होती है, तो उसे कार्यालयीन कामकाज की हिंदी भी सीखनी पड़ती है। इसके लिए उसे फिर से मेहनत करनी पड़ती है। यह भी थोड़ा कष्टकर होता है। किंतु हिंदी शिक्षण योजना के तहत हिंदी भाषा का प्रशिक्षण प्राप्त करके कर्मचारी अपना कामकाज हिंदी में करने के लिए कार्यसाधक ज्ञान अर्जित कर सकते हैं। मिधानि के कर्मचारी निर्धारित प्रतिशत के अनुसार कार्यसाधक ज्ञान अर्जित कर चुके हैं। इसके आधार पर ही मिधानि का नाम भारत के गजट में अनुसूचित किया गया है। उन्होंने आगे कहा कि नई शिक्षा नीति के सुचारू रूप से लागू होने पर विद्यार्थियों को शायद भाषा की समस्या का सामना करना नहीं पड़ेगा। इससे उनकी अपनी मातृभाषा में दक्ष होने के साथ-साथ देश की राजभाषा में भी संप्रेषण के लिए सक्षम होने की संभानाएँ अवश्य ही बढ़ जाएँगी।

प्रो. शकिला खानम, डॉ. संजय कुमार झा, सीएमडी मिधानि और डॉ. उपेंदर वेन्नम, आईपीओएस, मु.स.अ. दीप प्रज्वलित करते हुए।

डॉ. संजय कुमार झा कर्मचारियों को संबोधित करते हुए।

कार्यक्रम की मुख्य वक्ता प्रो. शकीला खानम, डीन, कला संकाय, डॉ. बी. आर अम्बेडकर विश्वविद्यालय ने "नई शिक्षा नीति : मातृभाषा और राजभाषा" विषय पर अपना व्याख्यान देते हुए कहा कि बालक के शिक्षण में

प्रो. शकिला खानम कर्मचारियों को संबोधित करते हुए।

मातृभाषा की बहुत बड़ी भूमिका है। इसी मनोविज्ञान के आधार पर सरकार ने नई शिक्षा नीति 2020 बनाई है। उन्होंने कहा कि भारत में 1968 व 1986 के 34 साल बाद तीसरी बार शिक्षा नीति में परिवर्तन का प्रयास इसरो के पूर्व अध्यक्ष डॉ. के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति के द्वारा किया गया है जिसका उद्देश्य सभी को शत प्रतिशत भविष्यपरक व रोजगारपरक शिक्षा देना है। इसके लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय किया गया है जिसके अंतर्गत शिक्षा विभाग आता है। अब बच्चों का स्कूल में दाखिला 6 साल के बजाय 3 साल में किया जाएगा। इस नई शिक्षा नीति में 10+2 स्ट्रीम सिस्टम का विलोप करके 5+3+3+4 मल्टिपल एंट्री व एग्जिट सिस्टम को अपनाया गया है। जिसके तहत बच्चों को पहले 5+ प्रोग्राम में पहले 3 साल तक किसी स्कूल या आँगनवाड़ी में प्ले स्कूल की तरह खेलना-कूदना शामिल रहेगा। तत्पश्चात क्रमश: कक्षा 1 व कक्षा 2 की पढ़ाई कराई जाएगी। इसे फाउंडेशन स्टेज नाम दिया गया है। इसमें कोई परीक्षा नहीं होगी। इसके बाद अगले +3 प्रोग्राम में क्रमश: कक्षा 3, 4 व 5 की पढ़ाई होगी जो स्थानीय या मातृभाषा में होगी। इसे प्रीपेटरी स्टेज

वाइड प्लेट मिल के विभागाध्यक्ष श्री केपीएस मोहन कृष्ण, अ.म.प्र. को मिधानि राजभाषा गरिमा पुरस्कार प्रदान करते हुए मिधानि के सीएमडी डॉ. संजय कुमार झा।

नाम दिया गया है। इसके बाद अगले +3 प्रोग्राम में क्रमश: कक्षा 6, 7 व 8 की पढ़ाई कराई जाएगी, जिसे मिडिल स्टेज नाम दिया गया है। इसमें परंपरागत विषयों के अलावा कंप्यूटर की शिक्षा तथा अन्य रुचि अनुसार व्यवसायिक पाठ्यक्रम शामिल किया जाएगा और भारत की अनुसूचित भाषाओं में से किसी एक भाषा की पढ़ाई कराई जाएगी। कक्षा 6 से व्यवसायिक शिक्षा उपलब्ध कराने की व्यवस्था सुनिश्चित कराई जाएगी, जिससे कि कौशल विकास सही समय पर प्रारंभ किया जा सके। इसके अंतिम +4 प्रोग्राम के तहत कक्षा 9, 10, 11 व कक्षा

12 की पढ़ाई कराई जाएगी, जिसे सेकेण्डरी स्टेज नाम दिया गया है। इसमें स्ट्रीम जैसे कामर्स, आर्ट या विज्ञान न चुनकर किसी से भी रुचि अनुसार विषय चयन कर सकेंगे और एक विदेशी भाषा का भी ज्ञान दिया जाएगा। डॉ. खानम ने बाताया कि नई शिक्षा नीति में 21वीं सदी के अनुरूप कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, क्रिप्टो, ब्लॉकचेन संबंधी आधुनिक पाठ्यक्रम भी शामिल किए जाएंगे जिससे स्नातक स्तर पर शिक्षार्थियों को लचीले पाठ्यक्रम से अपने रूचि के अनुसार विषय का चयन करने में आसानी हो सकती है। इसमें विभिन्न स्तर (वर्षों की शिक्षा) पर प्रवेश तथा निकास करने की भी व्यवस्था है। सर्टिफिकेट, डिप्लोमा अथवा स्नातक की उपाधि दी जाएंगी। चूंकि आरंभिक शिक्षा स्थानीय भाषा या मातृभाषा में होगी और भारत की अन्य भाषाओं से जब चयन का अवसर मिलेगा तो संभव है अभिभावक अपने बालकों के लिए देश की राजभाषा का चयन करें। उच्च शिक्षा भी मातृभाषा तथा राजभाषा में करने की व्यवस्था रहेगी। इससे हिंदी में कामकाज करने की दिक्कतों का समाधान हो पाएगा। संविधान के लागू होने के बाद से अब तक केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी में जितना काम हो रहा है, उसे में नई शिक्षा नीति के मॉडल में पढ़कर आए विद्यार्थियों द्वारा गति प्रदान करने की संभावनाएँ अवश्य बढ़ जाएँगी।

डॉ. उपेंदर वेन्नम कर्मचारियों को संबोधित करते हुए।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. उपेंदर वेन्नम, आईपीओस, मुख्य सतर्कता अधिकारी ने कहा कि मातृभाषा हम माँ से सीखते हैं। माँ हमारी प्रथम गुरु होती है। जिस तरह वह हमें इस जगत में लाती है उसी तरह हम माँ से मिली भाषा के माध्यम से इस जगत को देखने और समझने का प्रयास करते हैं। जो विद्यार्थी मातृभाषा में दक्ष होते हैं वे विश्व की अन्य भाषाओं को बड़ी आसानी से सीखते हैं। मातृभाषा में अध्ययन न करने के कारण ही शायद इस समय के विद्यार्थियों के सामने अंग्रेजी तथा हिंदी में संप्रेषण की कमी देखी जा रही है। मातृभाषा एक खिड़की के समान है जो विश्व की अन्य भाषाओं के साथ जुड़ने और सीखने में बड़ी भूमिका निभा सकती है। इसीलिए विद्यार्थियों को चाहिए कि वे चाहे किसी माध्यम से विद्याध्ययन करें किंतु मातृभाषा की पुस्तकें पढ़ते रहें। पठन से भाषा कौशल में अवश्य सुधार होता है और लिखित व मौखिक संप्रेषण के समय शब्द चयन की कला वे सीख सकते हैं।

कार्यक्रम के अंत में अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, मुख्य सतर्कता अधिकारी तथा मुख्य अतिथि ने हिंदी पक्षोत्सव के अवसर पर आयोजित शब्दावली, निबंध, वाक, प्रेरक प्रसंग और प्रश्नमंच प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कारों से सम्मानित किया। इन सभी प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले वाईड प्लेट विभाग को रोलिंग ट्रॉफी 'मिधानि राजभाषा गरिमा पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। इसी के साथ वर्ष 2021-22 के

दौरान कार्यालय का कामकाज हिंदी में करने वाले 50 कर्मचारियों को नकद पुरस्कार तथा प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। प्रतियोगिताओं के निर्णायक श्री प्रवीण एस वारद, उ.म.प्र. (भंडार), श्री टीजे राव, उ.म.प्र. (ईएमएस व सीओई), श्री सत्यनारायण, हिंदी अध्यापक (डीएवी स्कूल) और श्रीमती सावित्री, हिंदी अध्यापक (डीएवी स्कूल) को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

मिधानि के गायक कलाकार श्रीमती वर्षा, श्री विजयनाथ कुशवाह और श्रीमती सिंधु माधरी मिधानि गीत गाते हुए।

कार्यक्रम के आरंभ में श्री प्रवीण एस वारद, उप महाप्रबंधक (भंडार) तथा डॉ. सौरभ दीक्षित, वरि. प्र. (एएमडी) ने हिंदी दिवस पर जारी किए गए माननीय गृह मंत्री और माननीय रक्षा मंत्री के संदेश का क्रमशः वाचन किया। इस अवसर पर श्री रोहित निगुडकर, उ.म.प्र. (वित्त एवं लेखा) ने अपनी स्वरचित कविताओं का वाचन किया। कार्यक्रम का शुभारंक्ष दीप प्रज्वलन तथा श्रीमती सिंधु माधुरी, उ.प्र. (वित्त एवं लेखा), श्रीमती पी वर्षा, अवर कार्यपालक (वित्त) तथा श्री विजय कुमार कुशवाह, तकनीशियन, मेल्टशॉप द्वारा मिधानि गीत से हुआ। संचालन डॉ. बी. बालाजी, उप प्रबंधक (हिंदी अनुभाग एवं निगम संचार) ने किया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में हिंदी अनुभाग की अवर कार्यपालक श्रीमती डी वी रत्ना कुमारी का सक्रिय सहयोग रहा। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से हुआ।

प्रेरक प्रसंग

देशप्रेम के बाद विश्वप्रेम

एक बार की बात है, एक पत्रकार ने स्वामी विवेकानंद से पूछा, ' स्वामी जी! आप भारत से अथाह प्रेम करते हैं। एक संत होने के नाते आपको तो वसुधैव कुटुम्बकम् में विश्वास रखना चाहिए। प्रत्येक राष्ट्र को अपना ही मानना चाहिए। फिर आपको अपने देश के प्रति विशेष अनुराग क्यों ?'

स्वामी जी मुस्कुराए और पत्रकार के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, ' बंधुवर! जो व्यक्ति अपनी ही माँ को प्रेम और सेवा न दे सके, वह दूसरे की माँ को प्रेम और सेवा कैसे दे पाएगा ? इसीलिए मैं कहता हूँ कि पहले देश-भक्ति विकसित करो, फिर विश्व प्रेम की सोचना। '

हिंदी कार्यशाला की झलकियाँ

अप्रैल 2022:
डॉ. बेला, उप निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना द्वारा प्रतिभागियों को हिंदी में कामकाज करने की शपथ दिलायी गई। उन्होंने "राजभाषा नीति" विषय पर अपना ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया।

जून 2022:
दक्षिण मध्य रेलवे की वरिष्ठ अनुवादक डॉ. रानी गीतेश काटे के साथ प्रतिभागीगण। उन्होंने 'राजभाषा कार्यान्वयन में कर्मचारियों की भूमिका' विषय पर व्याख्यान दिया।

जुलाई 2022:
डॉ. काजिम अहमद, सहायक निदेशक (रा.भा.), आरसीआई के साथ प्रतिभागीगण। उन्होंने 'राजभाषा नीति और उसका कार्यान्वयन' विषय पर व्याख्यान दिया।

मिधानि में नियमित रूप से हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है। पिछली छह माही (अप्रैल-सितंबर 2022) में पाँच कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिनमें कुल 84 अधिकारियों और 13 कर्मचारियों को दैनिक काम-काज में हिंदी के प्रयोग की कठिनाइयों को सुलझाते हुए हिंदी के उपयोग की झिझक को दूर करने का प्रयास किया गया। उन्हें राजभाषा नीति, मानक हिंदी लिपि, व्यावहारिक व्याकरण, प्रशासनिक एवं तकनीकी शब्दावली का दैनिक काम-काज में प्रयोग, व्यावहारिक अनुवाद, आलेखन एवं टिप्पण आदि विषयों का प्रशिक्षण दिया गया है।

हिंदी कार्यशाला की झलकियाँ

अगस्त 2022:
डॉ. बेला, उप निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना प्रतिभागियों को हिंदी में के महत्व के बारे में बताते हुए। उन्होंने 'राजभाषा संबंधी संवैधानिक प्रावधान व उनका कार्यान्वयन' विषय पर व्याख्यान दिया।

सितंबर 2022:
मु. कमालुद्दीन, सहायक निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना के साथ प्रतिभागीगण। उन्होंने कार्यालयीन कामकाज में प्रयुक्त प्रशासनिक शब्दावली विषय पर व्याख्यान दिया।

वित्त वर्ष 2021-22 के लिए अंतरिम लाभांश का भुगतान

31 मार्च, 2022 को मिधानि ने माननीय रक्षा मंत्री को ₹ 21,62,65,296/- का अंतरिम लाभांश का चेक सौंपा। अवसर पर माननीय रक्षा मंत्री ने मिधानि के उत्पादों की प्रशंसा करते हुए कहा कि भारत को रक्षा उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के लिए मिधानि की अहम भूमिका रहेगी। उल्लेखनीय है कि मिधानि ने वित्त वर्ष 2020-21 के लिए 813.23 करोड़ की तुलना में वित्त वर्ष 2021-22 के लिए अब तक की सबसे अधिक बिक्री रु. 861.73 करोड़ (अनंतिम और अलेखापरीक्षित) रुपये दर्ज की।

बाएँ से दाएँ: श्री अनुराग बाजपेयी, संयुक्त सचिव, र.उ.वि., श्री देवजीत घोष, वरि.प्र., श्री एन गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त), डॉ. संजय कुमार झा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, मिधानि, माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह, डॉ. अजय कुमार, सचिव रक्षा, श्री संजय जाजू, अतिरिक्त सचिव (डीपी)

विज्ञान के क्षेत्र में हिंदी का प्रसार आवश्यक है

डॉ. संजय कुमार झा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

हिंदी भारत संघ की राजभाषा है। सभी केंद्र सरकार के अधीनस्थ कार्यालयों में राजभाषा संबंधी अधिनियम-नियम का अनुपालन अनिवार्यतः किया जाता है। हिंदी के पठन-लेखन ज्ञान के आधार पर भारत में तीन क्षेत्र बनाए गए – क, ख, ग। 'क' क्षेत्र में उन राज्यों को रखा गया जहाँ की प्रथम राजभाषा हिंदी है और जहाँ के स्कूलों में प्रथम भाषा के रूप में हिंदी अनिवार्यतः पढ़ाई जाती है- बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली तथा केंद्र शासित प्रदेश अंडमान व निकोबार द्वीप समूह; 'ख' क्षेत्र में वे राज्य हैं जहाँ द्वितीय राजभाषा हिंदी है और जहाँ के स्कूलों में द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी अनिवार्यतः पढ़ाई जाती है- गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब और केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़, दमन और दीव और दादरा और नगर हवेली; 'ग' क्षेत्र के अंतर्गत भारत के वे सारे राज्य आते हैं जो 'क' तथा 'ख' क्षेत्र में नहीं है। इन राज्यों की प्रथम राजभाषा उनकी अपनी क्षेत्रीय राजभाषा है और यहाँ के स्कूलों में आवश्यकता व सुविधानुसार प्रथम व द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी के अध्यापन की व्यवस्था की जाती है। इन क्षेत्रों में स्थित केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों, उत्पादन उपक्रमों व संगठनों जैसे मिधानि, बीडीएल, एनएमडीसी, मझगाँव डॉक लिमिटेड, बीईएमएल, बीईएल, ओएनजीसी, आईओसीएल, ईसीआईएल तथा आयुध निर्माणी की तरह ही वैज्ञानिक अनुसंधान करने वाली संस्थाओं जैसे डीआरडीओ, भारतीय विज्ञान संस्थान, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) जो भारत का सबसे बड़ा अनुसंधान एवं विकास (R&D) संगठन है, के प्रशासनिक विभागों में भी राजभाषा नीति का कार्यान्वयन निर्धारित लक्ष्यों के अनुसार निरंतर गतिशील है। किंतु इन उपक्रमों, संगठनों तथा संस्थाओं के वैज्ञानिक एवं अनुसंधान विभागों में राजभाषा नीति को लागू करना सरल नहीं होगा। इसका मुख्य कारण है यहाँ पर तैनात प्रौद्योगिकी कर्मी व वैज्ञानिकों की उच्च शिक्षा का माध्यम। भले इन कर्मियों व वैज्ञानिकों ने प्राथमिक शिक्षा अपनी मातृभाषा में या हिंदी में ली होगी, किंतु उच्च शिक्षा और उसके बाद कार्यक्षेत्र की माँग के अनुसार अपने तकनीकी लेखों व अनुसंधान प्रपत्रों को इन्होंने अवश्य ही अंग्रेजी में लिखा होगा।

इस क्षेत्र में राजभाषा के कार्यान्वयन अर्थात अनुसंधान संबंधी दस्तावेज तथा प्रपत्र हिंदी में लेखन के लिए विशेष प्रयासों की आवश्यकता है। इन प्रयासों का आरंभ वैज्ञानिक तथा तकनीकी कर्मी को स्वयं करना होगा। संस्था उसे अवश्य प्रोत्साहित करेगी। उसे चाहिए कि अनुसंधान के मूल विचार हिंदी भाषा के माध्यम से प्रकाशित कर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी को भारत की सामान्य जनता तक पहुँचाने की पहल करें। सामान्य जन के लाभ के लिए किए गए अनुसंधान की लोकप्रियता और सफलता के लिए यह बेहद जरूरी है। ऐसा करने के लिए वैज्ञानिकों को हिंदी के प्रति हीन भावना को त्याग कर सम्मान का भाव रखना होगा। हिंदी सीखें और उसकी

दैनिक कार्य जीवन में उपयोग करें। राजभाषा विभाग द्वारा संचालित हिंदी पाठ्यक्रमों से अपने हिंदी ज्ञान को बढ़ाएँ। यदि मौलिक लेखन हिंदी में नहीं हो पा रहा है तो प्रकाशन से पूर्व हिंदी में तथा स्थानीय भाषा में तुरंत अनुवाद करवाएँ। विकसित देशों ने ऐसा ही किया है। इन देशों में अपनी भाषा में तकनीकी साहित्य विकसित करने में भारत की तुलना में अधिक तत्परता दिखाई देती है।

आशा की जा रही है कि नई शिक्षा नीति 2020 के लागू होने के बाद प्राथमिक व उच्च शिक्षा में वैज्ञानिक व तकनीकी विषय का शिक्षण हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध होगा। इसे बढ़ावा मिलेगा। इससे अनुसंधान व विकास कार्य को अपनी मातृभाषा में तथा हिंदी में करने के लिए प्राथमिकता मिलने लगेगी।

वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा निर्मित तकनीकी शब्दकोश की सहायता से भी वैज्ञानिक आलेखों को मौलिक रूप में हिंदी में लिखा जा सकता है। यह आयोग हिंदी तथा अन्य सभी भारतीय भाषाओं के लिए वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दों का पारिभाषिक संवर्धन करने तथा पारिभाषिक कोशों, शब्द कोशों तथा विश्वकोशों का प्रकाशन करता है। इस आयोग द्वारा विकसित मानक शब्दावली व परिभाषाओं का छात्रों, अध्यापकों, शोधकर्ताओं, वैज्ञानिक तथा अधिकारियों को लाभ उठाना चाहिए। यह आयोग हिंदी में वैज्ञानिक लेखन को बढ़ावा देने के लिए "ज्ञान गरिमा सिंधु" और "विज्ञान गरिमा सिंधु" त्रैमासिक पत्रिकाओं का प्रकाशन करता है। "ज्ञान गरिमा सिंधु" में मानविकी तथा सामाजिक विज्ञान के विषयों से संबंधित लेख तथा "विज्ञान गरिमा सिंधु" में आधार-विज्ञानों, अनुप्रयुक्त विज्ञानों तथा प्रौद्योगिकी से संबंधित लेख प्रकाशित किए जाते हैं।

मिधानि द्वारा जेम में रिकार्ड खरीदी

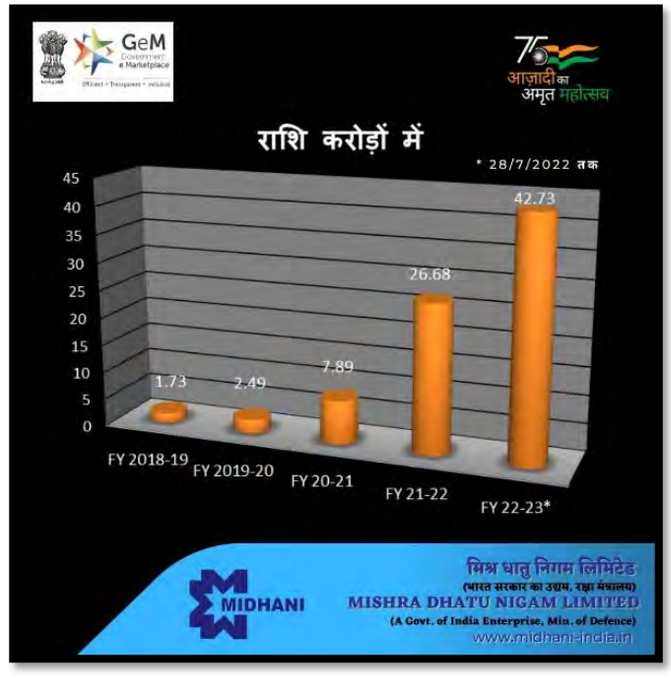

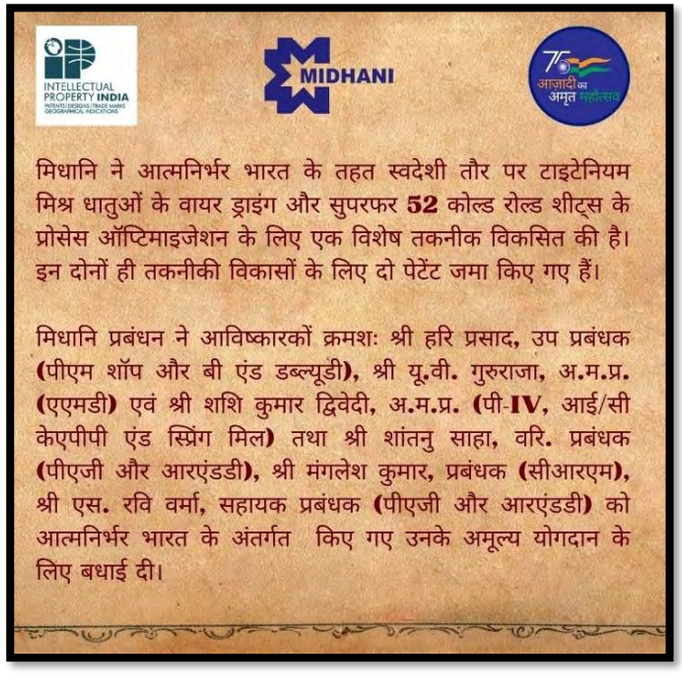

भारत सरकार हिंदी में तकनीकी पुस्तक तथा आलेखों के लिए पुरस्कार भी देती है - "राजभाषा गौरव पुरस्कार"। इसी क्रम में मिधानि में भी तकनीकी पुस्तक लेखन के लिए "मिधानि राजभाषा गौरव पुरस्कार" योजना संचालित है। मिधान में तकनीकी लेखन कार्य आरंभ किया जा चुका है। मिधानि की राजभाषा गृह पत्रिका "संकल्प" में तकनीकी लेख प्रकाशित किए जा रहे हैं। मिधानि आर एंड डी विभाग तथा अन्य विभागों के सदस्य हिंदी में लेखन करने में रुचि दिखा रहे हैं, जो कि एक सकारात्मक पहल है। मेरा विश्वास है कि मिधानि में यह कार्य निरंतर चलता रहेगा और हिंदी को तकनीकी साहित्य से समृद्ध बनाने में मिधानि द्वारा योगदान निरंतर दिया जाएगा।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के कुछ महत्वपूर्ण चरण

18वीं शताब्दी : भरतपुर राज्य तथा पूर्वी राजस्थान के कई रजवाड़े हिंदी (ब्रजभाषा) में कार्य कर रहे थे।

1835 : बिहार में हिंदी आंदोलन शुरू हुआ था। इस अनवरत प्रयास के फलस्वरूप सन् 1875 में बिहार में कचहरियों और स्कूलों में हिंदी प्रतिष्ठित हुई।

1872 : आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश लेखन हिंदी में किया।

1873 : महेंद्र भट्टाचार्य द्वारा हिंदी में पदार्थ विज्ञान (material science) की रचना की गई।

1878 : भारतमित्र नामक हिंदी समाचार पत्र का कलकता से प्रकाशन। इसे कचहरियों में हिंदी प्रवेश आंदोलन का मुख पत्र कहा जाता है।

1882 : भारतेंदु हरिश्चंद्र ने शिक्षा आयोग (हन्टर कमीशन) के समक्ष अपनी गवाही दी जिसमें हिंदी को न्यायालयों की भाषा बनाने की महत्ता पर बल दिया।

1880 : गुजराती के महान कवि श्री नर्मद (1833-86) ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का विचार रखा।

1893 : काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना।

1898 : मदन मोहन मालवीय के नेतृत्व में 17 सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल ने पश्चिमोत्तर प्रदेश व अवध के गवर्नर सर एंटोनी मैकडोनेल को 'कोर्ट कैरेक्टर एण्ड प्राइमरी एजुकेशन इन नार्थ वेस्टर्न प्रोविन्सेज' नामक ज्ञापन सौंपा। फलस्वरूप पश्चिमोत्तर प्रान्त में कचहरियों और प्राइमरी स्कूलों में हिंदी भाषा के लिए द्वार खोल दिया।

1907 : गुरुकुल कांगड़ी के महाविद्यालय में हिंदी विभाग खुला और हिंदी में विज्ञान, गणित, पाश्चात्य दर्शन आदि सभी विषयों की शिक्षा का माध्यम रखा गया। उस समय हिंदी में उच्च शिक्षा देना एक असंभव बात समझी जाती थी। गुरुकुल ने इसे संभव कर दिखाया।

1907 : न्यायमूर्ति शारदाचरण मित्र द्वारा 'एक लिपि विस्तार परिषद' की स्थापना एवं देवनागरी लिपि में 'देवनागर' नामक मासिक पत्र का प्रकाशन। (शेष पृष्ठ 21 पर)

पुरस्कृत निबंध

प्रौद्योगिकी तथा प्रबंधन में नैतिकता एवं मूल्य

पीयूष पालिवाल, प्रबंधक (रिफ्रैक्टरी)

प्रस्तावना :

नैतिकता जिसे अंग्रेजी में 'Ethics' कहते है, यह 'Ethics' शब्द लैटिन भाषा के 'Ethos' शब्द से बना है जिसका तात्पर्य है- परंपरा,आदत आदि। नैतिकता वस्तुत: एक ऐसे मानदंड को कहते हैं जो किसी मनुष्य के व्यवहार व आचरण के सही एवं गलत होने को दर्शाता है। वही दूसरी ओर,मूल्य वह धारणाएं हैं जो कि अच्छे-बुरे को वरीयता में रखती है तथा वांछनीय-अवांछनीय तत्वों में भेद बना कर रखती है। नैतिकता तथा मूल्य मनुष्य के जीवन में उसके आस-पास के माहौल', माता-पिता, शिक्षण संस्थानों से पूर्णतया प्रभावित होती है।

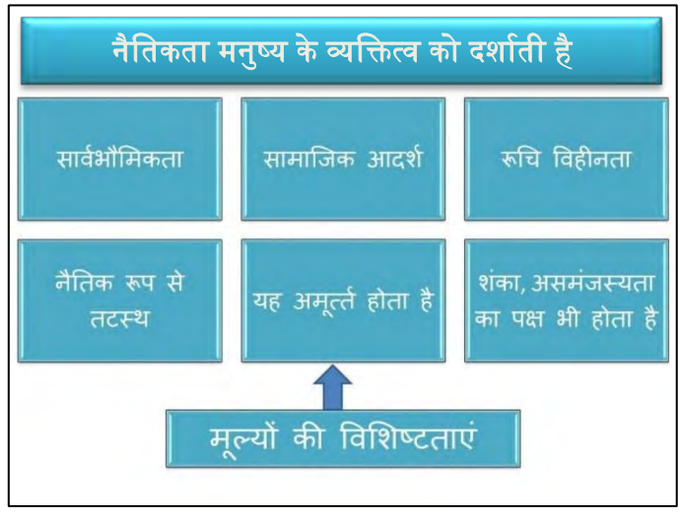

मानवीय मूल्य प्रत्येक समाज के व्यक्ति अपने हृदय में धारण करते हैं तथा सांसारिक जीवन से प्रेरणा लेकर और भी सुदृढ़ हो जाते हैं। नैतिक मूल्य मनुष्य के जीवन में एक प्रकाश स्तंभ की तरह कार्य करते हैं तथा मानव समाज को शांति एवं सरसता प्रदान करते हैं।

विभिन्न धर्म ग्रन्थ जैसे रामायण, महाभारत, कुरान, बाइबल आदि नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देने पर बल देते हैं तथा एक आदर्श भी प्रदान करते हैं। जैसे कि रामायण से सत्यवादिता, समर्पण, बड़ों के प्रति आदर, परोपकार, सत्यनिष्ठा आदि मानवीय मूल्य, मानव समाज को सभ्य तथा आनंदमय कर देते हैं। ये सभी नैतिक मूल्य, विश्व की सभी सभ्यताओं में रचे-बसे हुए हैं किन्तु कलियुग में भौतिक वादी विचारधारा से अभिभूत हो कर मनुष्य इन मूल्यों तथा नैतिक कर्तव्यों को दर किनार कर रहा है। प्रौद्योगिकी तथा प्रबंधन के क्षेत्र में नैतिकता एवं मानवीय मूल्यों का क्षय होना मानव सभ्यता के लिए एक खतरा बनता जा रहा है।

प्रौद्योगिकी क्षेत्र में नैतिकता एवं मूल्यों का अवलोकन:

मानव समाज में औद्योगिक क्रांति के पश्चात प्रौद्योगिकी क्षेत्र में अमूल-चूल परिवर्तन देखने को मिले हैं। प्रौद्योगिकी क्षेत्र में विस्तार जैसे कि मशीन करण, स्वचालित उपकरण, कंप्यूटर इत्यादि ने क्रांति ला दी है। इन सब से मानव जीवन और भी सुगम्य हो गया है किंतु इसके दुष्परिणाम भी सामने आ रहे हैं। ये दुष्परिणाम, मानवीय मूल्यों तथा नैतिकता में आई कमी को साफ तौर पर दर्शाते हैं तथा प्रश्न चिह्न लगाते हैं कि क्या हम वास्तव में प्रगति कर रहे हैं? यहाँ कुछ प्रौद्योगिकियों में नैतिकता एवं मूल्यों के ह्रास होने के कारणों को संक्षिप्त में जानने का प्रयास करेंगे :

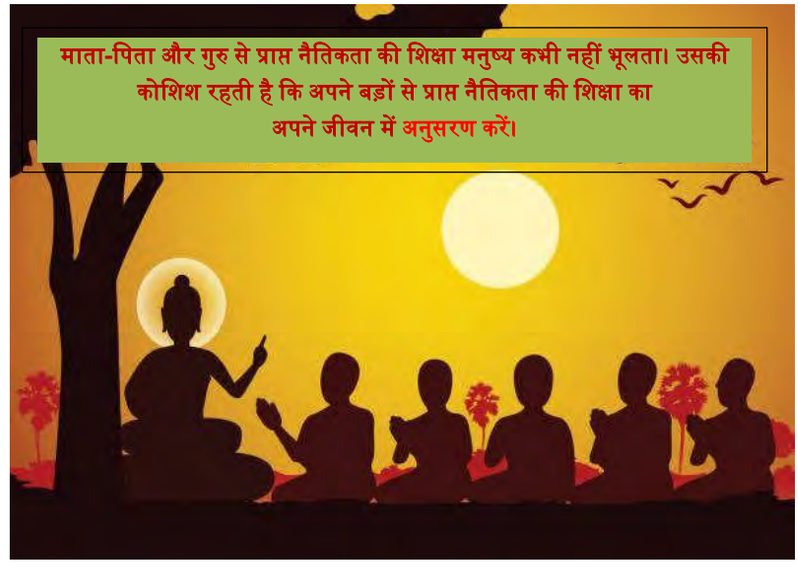
माता-पिता और गुरु से प्राप्त नैतिकता की शिक्षा मनुष्य कभी नहीं भूलता। उसकी कोशिश रहती है कि अपने बड़ों से प्राप्त नैतिकता की शिक्षा का अपने जीवन में अनुसरण करें।

राजभाषा हिंदी के..... (पृष्ठ 19 का शेष)

1917 : महात्मा गांधी ने 1917 में भरूच में गुजरात शैक्षिक सम्मेलन में अपने अध्यक्षीय भाषण में राष्ट्रभाषा की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा था कि भारतीय भाषाओं में केवल हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसे राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाया जा सकता है।

1918 : मराठी भाषी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने कांग्रेस अध्यक्ष की हैसियत से घोषित किया कि हिंदी भारत की राजभाषा होगी।

1918 : इंदौर में संपन्न आठवें हिंदी सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए महात्मा गांधी ने कहा था - मेरा यह मत है कि हिंदी को ही हिंदुस्तान की राष्ट्रभाषा बनने का गौरव प्रदान करें। हिंदी सब समझते हैं। इसे राष्ट्रभाषा बनाकर हमें अपना कर्त्तव्य पालन करना चाहिए।

1918 : महात्मा गांधी द्वारा दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की स्थापना।

1930 : इस वर्ष कांग्रेस अधिवेशन में आयोजित राष्ट्रभाषा सम्मेलन में स्वीकार किया गया कि देश का अंतर प्रांतीय कार्य राष्ट्रभाषा हिंदी में ही होना उचित एवं हितकारी है।

1930 : शैलेंद्र मेहता द्वारा हिंदी टाइपराइटर का विकास।

1935 : मद्रास राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में सी. राजगोपालाचारी ने हिंदी शिक्षा को अनिवार्य कर दिया।

1937 : हरि गोविंद गोविल (1899 -1956) द्वारा देवनागरी के लिए एक नए टाइपफेस का आविष्कार किया।

परमाणु शक्ति :

परमाणु शक्ति का शांति रूप से प्रयोग मानवीय जीवन को विद्युत ऊर्जा प्रदान करता है। वहीं दूसरी ओर इसका दुरुपयोग होने की पूरी संभावना, मानव जगत में क्षय होती मानवीय मूल्यों को दर्शाती है। परमाणु शक्ति विश्व विनाशक हो सकती है यदि इसका संचालन विश्व की दुष्ट शक्तियों के हाथ लग जाए। वे अपने स्वार्थ के लिए पूरी दुनिया को तबाह कर सकते हैं।

चिकित्सा क्षेत्र :

चिकित्सा क्षेत्र में आई नई प्रौद्योगिकी जैसे कि ' स्टेमसेल थेरपी' ने यह नैतिक प्रश्न उठाया है कि क्या मानव जीवन की आयु बढ़ाने के लिए भ्रूण पर परीक्षण किए जाने चाहिए ? यह कहाँ तक नैतिक है कि भ्रूण की हत्या की जाए? भ्रूण परीक्षण कर लिंग की जाँच की जाती है। होने वाली संतान यदि लड़की हो, तो उसे भ्रूण अवस्था में ही समाप्त कर दिया जाता है। इसके अलावा चिकित्सा क्षेत्र में औषधियों की बिक्री में भी धांधलियाँ होती है। चिकित्सक अपनी फीज़ बनाए रखने के लिए रोगी को अनावश्यक परीक्षण करने के लिए कहते हैं। कोविड के समय तो जहाँ सदाचारी चिकित्सकों ने न केवल अपनी सेवा भावना से रोगियों को बचाया बल्कि अपनी जान भी गवाई, वहीं कुछ दुराचारी चिकित्सकों ने कोविड रोगियों से खूब धन लूटा। चिकित्सक को ईश्वर का दर्जा दिया जाता है। अनैतिक चिकित्सकों की वजहसे चिकित्सा क्षेत्र पर कलंक लग जाता है।

मिधानि प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का उद्घाटन

डॉ. संजय कुमार झा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, मिधानि द्वारा दि. 09.05.2022 को हैदराबाद के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. वेंकट, निदेशक (वित्त) श्री गौरी शंकर राव उद्यम के सीवीओ और डॉ. उपेंदर वेन्नम, आईपीओएस की उपस्थिति में मिधानि के डॉ. बी. आर. अंबेडकर मैदान, में स्थापित 'मिधानि प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र' का उद्घाटन किया गया। इस केंद्र का निर्माण नैगमिक सामाजिक दायित्व (सीएसआर) के अंतर्गत मिधानि के आस-पास के गरीब परिवारों की चिकित्सा देखभाल के लिए चिकित्सा सेवाएँ उपलब्ध कराने के लिए की गई है।

इनविट्रो फर्टलाइजेशन :

तकनीक भी आनुवंशिक स्तर पर कृत्रिम जीन्स बनाने तथा मानव जीवन को अपने ढंग से संचालित करने के दृष्टिकोण से नैतिक मूल्यों से छेड़छाड़ करती है तथा प्रश्नों के घेरे में घिर जाती है।

कंप्यूटर एवं आर्टिफीशियल इंटेलिजेन्स :

कंप्यूटर जगत में आई प्रौद्योगिकी क्रांति आज कृत्रिम मानव बनाने तक पहुँच गई है। यह तकनीक शुरुआत से ही रोजगार के साधन कम करने तथा अन्य कारणों से नैतिक मूल्यों के साथ समझौता करती आई है। आर्टिफीशियल इंटेलिजेन्स से तो मनुष्यता को ही खतरा उत्पन्न हो गया है। मानवीय मूल्यों का क्षय होना निश्चित ही प्रतीत होता है। आर्टिफीशियल इंटेलिजेन्स का इस्तेमाल मानव जीवन को सरल व उपयोगी बनाने में किया जाना चाहिए न कि रोजगार निगलने वाला।

साइबर सुरक्षा :

जैसे-जैसे सूचना प्रौद्योगिकी तथा इंटरनेट के साधनों का उपयोग बढ़ रहा है वैसे-वैसे अमानवीय तत्व तथा घटनाएँ मनुष्य तक सहज उपलब्ध हो रही हैं। ये सब, मानवीय मूल्यों की उपेक्षा करके मानव समाज को नकारात्मक बना रही हैं। लोग आज अपने परिवार के साथ मानवीय मूल्यों की बात नहीं करते है अपितु इन संसाधनों में ही उलझकर रह जाते हैं। निजता का हनन, आर्थिक विपत्तियाँ आदि उत्पन्न हो रही हैं।

जैव प्रौद्योगिकी :

जैव प्रौद्योगिकी में जीन्स का स्थानांतरण करके, उत्पादकता बढ़ाने की दिशा में जो कदम आगे बढ़ रहे हैं, वे कदम आज भौतिकवाद विचारधारा में लिप्त होकर ऐसे नए उत्पाद बना रहे हैं जो कि कैंसर जैसी बीमारियों को आमंत्रित कर रहे हैं।

पर्यावरण का दोहन:

नैतिकता एवं मानवीय मूल्यों के क्षय होने का सबसे ज्वलंत उदाहरण है पर्यावरण प्रदूषण तथा जलवायु परिवर्तन। औद्योगिक क्षेत्र एवं ऊर्जा क्षेत्र में आई प्रौद्योगिकी क्रांति ने सतत पोषण विकास के मूल्य को मानो दफना ही दिया है। मनुष्य आज केवल अपने ही बारे में सोचकर जी रहा है तथा भावी पीढ़ी पर हो रहे अत्याचारों को देखकर भी आंखें मूंद ले रहा है। ये सब मानवीय मूल्यों में आई क्षति का ही दुष्परिणाम हैं।

आइए अब देखते हैं प्रबंधन के क्षेत्र में नैतिकता एवं मूल्यों का क्या महत्व है?

ऐसे प्रबंध संस्थान प्रगति कर जाते हैं जो अपने कर्मचारियों में सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता, सत्यवादिता, उत्तरदायित्व जैसे मानवीय मूल्यों को आत्मसात करा सकते हैं।

प्रबंधन का प्रकार्य कार्यप्रणाली बनाना और उनके सुचारु संचालन की व्यवस्था करके विनिर्दिष्ट लक्ष्य को हासिल करना होता है, न कि किसी एक अधिकारी या कर्मचारी पर कार्यों का भार लादना।

प्रबंधन के क्षेत्र में नैतिकता एवं मूल्यों का अवलोकन :

प्रबंधन के क्षेत्र में मूलतः नियम एवं कार्यप्रणाली का निर्माण एवं प्रासंगिक दिशा निर्देशों को समय-समय पर प्रभावी रूप से लागू किए जाते हैं। नियमावली के अनुसार किसी भी व्यवसाय का प्रबंधन सुचारु रूप से चलता हैं। किन्तु, व्यावसायिक प्रबंधन में कुछ क्षेत्र ऐसे होते हैं जहाँ पर कर्मचारियों के नैतिक आधार तथा मानवीय मूल्य अधिक कारगर होते हैं। जैसे कि कभी विवेकाधिकार से निर्णय लेना हो और जहाँ नियम शांत हों।

नैतिकता एवं मानवीय मूल्य क्षति, व्यवसायों में भ्रष्टाचार, उत्पादकता में कमी तथा अराजकता उत्पन्न करा कर पतन का कारण बन जाती हैं। टाटा समूह, भारत का एक अग्रणी व्यावसायिक समूह है, जो इस बात पर विशेष बल देता है कि उसके कर्मचारी सत्यनिष्ठा तथा सभी मानवीय मूल्यों का अक्षरशः पालन करें। यह समूह कॉर्पोरेट सोशल रेसपान्सिबिलिटी के क्षेत्र में भी अग्रणी हैं। किसी भी व्यावसायिक प्रबंधन में कुछ ऐसे क्षेत्र होते हैं जहाँ दिशा-निर्देश जारी कर पाना असंभव होता है। इन सब क्षेत्रों में कर्मचारियों के नैतिक मूल्य ही उन्हें सही कार्य करने की प्रेरणा देते हैं। इसीलिए यह कहा भी जाता है कि जिस व्यावसायिक प्रबंधन में नैतिक मूल्यों तथा मानव विकास पर बल दिया जाता है, वही व्यवसाय लंबे समय तक चलते हैं तथा पर्यावरण एवं सामाजिक लाभ प्रदान करते हैं। अत: प्रबंधन के क्षेत्र में विभिन्न नैतिक मूल्यों का समावेश करना तथा ऐसा वातावरण बनाकर रखना चाहिए जिसमें कि अनैतिक कृत्यों का सही समय पर दमन किया जाए तथा मूल्यों को पारदर्शिता के साथ बढ़ावा मिले ।

उपसंहार :

नैतिकता एवं मानवीय मूल्य हमारी प्राचीन सभ्यता से चले आ रहे प्रकाश स्तंभ की तरह हैं। समय के साथ इनमें वांछनीय परिवर्तन होते रहे हैं। ये प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन क्षेत्र के साथ-साथ संपूर्ण मानव कार्यकलापों को सही ढंग से करने के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। धीरे धीरे मानवीय जगत यह सोचने लगा है कि वस्तुत: मानवीय मूल्य ही हैं जो हमें चेतना प्रदान करते हैं तथा शांति एवं खुशहाल जीवन जीने में मदद करते हैं। भौतिकवाद से मुंह मोड़ कर अध्यात्मिक जगत में समाविष्ट मानवीय मूल्य ही वास्तव में मानव समाज का कल्याण कर सकते हैं।

घातक दंश

प्रेरक प्रसंग

एक बार कृष्णदेव राय ने अपने दरबार में आसीन विद्वानों से प्रश्न किया, इस जगत में सबसे तेज काटने वाला कौन है ? एक विद्वान ने कहा, ततैया। दूसरे ने मधुमक्खी, तीसरे ने बिच्छू और अन्य ने कहा कि साँप सबसे तेज काटता है। अभी तक तेनालीराम ने जवाब नहीं दिया था। महाराज उसकी ओर ही देख रहे थे। तेनालीराम ने कुछ सोचा और कहा, राजन, दो ही सबसे तेज काटते हैं – जलनखोर और चाटुकार। जलनखोर के मन में जहर भरा रहता है और वह अपनी द्वेष भरी वाणी से काटता है। उसके इस तरह काटे जाने से सामास्य मनुष्य भी तिलमिलाए बिना नहीं रहता। चाटुकार को अपना मतलब सिद्ध करना होता है। वह अपनी मधुर-रस भरी जहरीली वाणी से काटता है और उस व्यक्ति के विवेक को समूल नष्ट कर देता है।

मिधानि और भारतीय वायु सेना के बीच समझौता ज्ञापन

मिधानि ने विमानन से संबंधित घटकों के उत्पादन के लिए योज्य निर्माण प्रक्रिया के लिए टाइटेनियम मिश्र, एल्यूमीनियम मिश्र और विशेष स्टील जैसे विभिन्न धातु पाउडर के विकास और स्वदेशीकरण के लिए भारतीय वायु सेना के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। 18 जुलाई 2022 को 9 बेस रिपेयर डिपो, वायु सेना, पुने में एयर मार्शल विभास पांडेय की उपस्थिति में श्री टी. मुत्तुकुमार, निदेशक (उत्पादन एवं विपणन), मिधानि और पीएस सरीन, वीएसएम, एयर वाइस मार्शल, भारतीय वायु सेना द्वारा समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इसका उद्देश्य एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग द्वारा एविएशन कंपोनेंट्स के निर्माण के लिए आवश्यक अन्य एविएशन मैटेरियल्स के निर्माण व विकास के लिए मिधानि और आईएएफ की संयुक्त साझेदारी को सक्षम बनाना है।

मिधानि में मध्य-प्रबंधन के लिए कैरियर विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम

29.08.2022 को मिधानि में मध्य स्तरीय प्रबंधन के लिए मिड-कैरियर प्रशिक्षण का समापन कार्यक्रम संपन्न हुआ। मध्य स्तरीय प्रबंधन के चौथे बैच के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन रक्षा मंत्रालय और केंद्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी) के निर्देशों के अनुपालन में 16 अगस्त से 29 अगस्त, 2022 तक किया गया था। इस कार्यक्रम कार्यक्रम में डॉ. संजय कुमार झा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री टी. मुत्तुकुमार, निदेशक (उत्पादन एवं विपणन) और डॉ. उपेंदर वेन्नम, आईपीओएस, सीवीओ ने अपने संबोधनों के माध्यम से प्रतिभागियों को प्रबंधन में अहम भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया। प्रशिक्षण के दौरान श्री ए. रामकृष्ण राव, महाप्रबंधक (मानव संसाधन), श्री देबाशीष दत्ता, महाप्रबंधक, पीएमओ, श्री सुपार्थ सेन, महाप्रबंधक, सतर्कता और श्री टीजे राव, उप महाप्रबंधक, प्रशासन ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। कार्यक्रम का संचालन श्री पवन कुमार, उप प्रबंधक, प्रशिक्षण एवं विकास ने किया।

नैतिकता मानव के जीवन का आधार

उमेंद्र सिंह, तकनीकी सहायक (वाइड प्लेट मिल)

'नैतिकता' नीति शब्द से बना है। नैतिकता मानव के जीवन का आधार है। आज के इस नवयुग में सुनने में आता है कि, संसार से नैतिकता विलुप्त हो गई है। किंतु यह पूरा सत्य नहीं है। नैतिकता का प्रभाव इस नवकाल में थोड़ा सा कम हुआ है, लेकिन पूरी तरह से विलुप्त नहीं हुआ है। नैतिकता आज भी हर घर, समाज, शहर, गाँव, देश और विश्व में है। मेरे विचार से नैतिकता का अर्थ है मानव में आदर-सम्मान, दयालुता, उदारता, अनुराग और अनुशासन का होना है। एक नैतिक व्यक्ति भीड़ में भी अलग प्रज्ज्वलित होता है। नैतिकता ही मानव को अन्य जीवों से भिन्न करती है। नैतिकता के बिना मानव पशुवत है।

प्रौद्योगिकी ज्ञान की वह शाखा है जो तकनीकी साधनों के निर्माण और उपयोग, प्रकृति और मानव को एक साथ लेकर चलती है। प्रौद्योगिकी उत्पादकों और उपभोक्ताओं के बीच का साधन बनती है। प्रौद्योगिकी मानव के जीवन को सरल बनाती है। लेकिन जब हम नैतिकता की बात करते हैं, तब हम प्रौद्योगिकी में नैतिकता के विषय को भूल जाते हैं। प्रद्योगिकी और नैतिकता का परस्पर मेल है और ये दोनों मनुष्य के जीवन को पूरी तरह से प्रभावित करते हैं।

प्रौद्योगिकी के साथ नैतिकता का गहरा नाता है। तकनीकी प्रणालियों और

मिधानि में ईसीएस शेड का विस्तार

दि. 04 जून को मिधानि में ईसीएस शेड का विस्तार किया जा रहा है। डॉ. एसके झा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक और श्री गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त) ने आज भूमि पूजा की। इस अवसर पर श्री देबाशीष दत्ता, म.प्र., पी एम ओ, श्री मदन मोहन, अपर महाप्रबंधक, पी एम ओ और अन्य उच्च अधिकार एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

प्रथाओं के नैतिक आयामों पर अंतरदृष्टि प्रदान करने के लिए कई ज्ञान स्रोत (जैसे कप्यूटर, मोबाइल फोन, गैजेट्स और अन्य उपकरण) के सिद्धांतो और विधियों पर आधारित है। एक तकनीकी रूप से समाज को आगे बढ़ाना ही प्रौद्योगिकी का मूल लक्ष्य है। प्रौद्योगिकी नैतिकता को समाजिक रूप से एम्बेडड उद्यमों के रूप में देखा जाता है। प्रौद्योगिकी के लिए नैतिक उपयोगों की खोज करने, दुरुपयोग के खिलाफ और अनुप्रयोग के नई प्रगति का मार्गदर्शन करने के सिद्धांतो पर केंद्रित है। आज के नवयुग में प्रौद्योगिकी का प्रयोग मानव सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए करना चाहता है। वो प्रकृति और मातृभूमि के उपकरों को भूल रहा है। अपितु प्रौद्योगिकी मानव विकास के लिए अनिवार्य है, किंतु इसका प्रयोग इस प्रकार होना चाहिए कि मानवीकरण और प्रकृति का परस्पर भार संतुलित रहे।

प्रौद्योगिकी का सिर्फ विकास ही मानव को अन्य प्राणियों की तुलना में उच्च स्थान नहीं दिलाता है। नई प्रौद्योगिकी का इस प्रकार से प्रबंधन किया जाना चाहिए कि मानवीकरण नैतिकता का एक उदाहरण बनें। उदाहरण के लिए, परमाणु ऊर्जा की खोज जो मानव के लिए बहुत बडी उपलब्धि थी। परमाणु ऊर्जा का उपयोग करके आने वाले युगों मे ऊर्जा क्षेत्र में बहुत विकास हो गया। लेकिन इस नई प्रौद्योगिकी का सही प्रकार से प्रबंधन नहीं किया गया जो जापान के शहरों में विश्व युध्द के दौरान विनाश का कारण बना।

आजकल उभरती हुई प्रौद्योगिकी हर घर, मोहल्ले, शहर, देश और विश्व को प्रभावित कर रही है। नई प्रौद्योगिकी के कारण मानव अपने मूल धर्म को भूलते जा रहा है। अत: वे अपने नैतिक मूल्य से मुँह फेर रहे हैं। प्रौद्योगिकी का विकास भ्रष्टाचार को बढावा दे रहा है। प्रौद्योगिकी के विकास से मानव की निजी जानकारियाँ कुछ असामाजिक लोगो के द्वारा चोरी की जाती है और उनका प्रयोग गलत कामों के लिए किया जा रहा है। कई लोगों के तो बैंक अकाउट से उनका धन लूट लिया जाता है। यह प्रौद्योगिकी का गलत तरह से प्रयोग का उदाहरण है।

नवयुग के शिशु भी प्रौद्योगिकी के शिकार हुए हैं। बच्चे दिनभर मोबाईल फोन, वीडियों गेम्स और अन्य उपकरण के साथ दिनभर व्यस्त दिखाई देते हैं। हर घर में नैतिकता होना अनिवार्य है। बिना नैतिकता के घर नहीं चल सकता। घर के मुखिया की ज़िम्मेदारी है कि घर में नैतिकता का पालन हो। घर में माँ और पिताजी को अपने शिशु पर ध्यान देना चाहिए और अपने शिशु को प्रौद्योगिकी का सही प्रबंधन करने की शिक्षा देनी चाहिए। उन्हें नैतिकता का मूल मंत्र सिखाना चाहिए।

कहा गया है कि आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। मानव के जीवन में जब भी कोई समस्या उत्पन्न होती है तो वह प्रौद्योगिकी की ओर बढ़ता है और नए-नए उद्योगों का आविष्कार करता है। लेकिन इन नव आविष्कारों से मानव अपने मूल आदर्शों से नहीं भटकना चाहिए। नैतिकता को हमेशा ही जीवन का उद्देश्य होना चाहिए जो मानवीकरण और प्रकृति के विकास में लाभदायक हो। नैतिकता के मूल्य को समझ कर ही मनुष्य को प्रौद्योगिकी क्षेत्र का सही में संतुलन बनाए रखना चाहिए।

मिधानि में वैक्यूम प्रौद्योगिकी और अनुरक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

श्री टी. मुत्तुकुमार, निदेशक (उत्पादन एवं विपणन) मिधानि ने सीओई बिल्डिंग, मिधानि में 4 जुलाई, 2022 को "वैक्यूम प्रौद्योगिकी और अनुरक्षण' पर दो दिवसीय (04-05 जुलाई 2022) प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। यह प्रशिक्षण मिधानि के तकनीकी कर्मचारियों के लिए आयोजित किया गया था जो कि उनकी कार्यक्षमता को बढ़ाने में अत्यंत उपयोगी रहा।

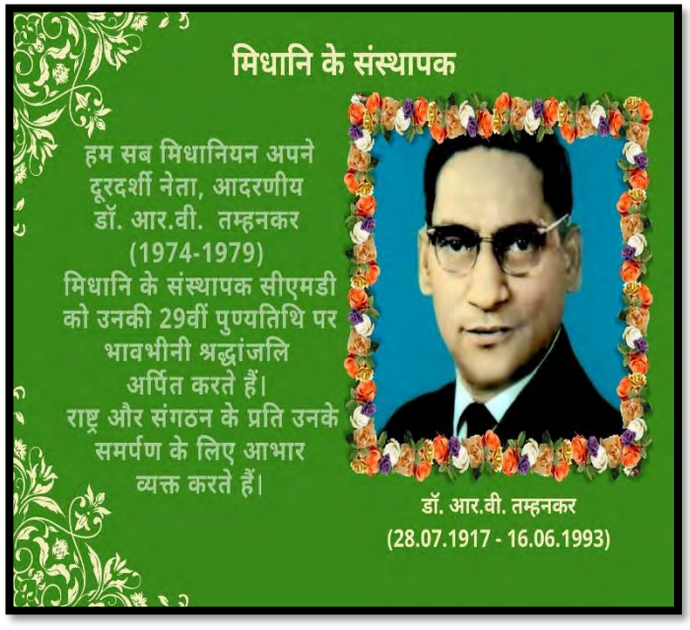

दि. 19.05.2022 को मिधानि ने मुरुगप्पा ग्रुप के बड़े व पुराने समूह, कारबोरंडम यूनिवर्सल लिमिटेड (सीयूएमआई) के साथ सिरेमिक आधारित संमिश्रित कवच उत्पादों के संयुक्त कार्य और विकास के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

सूर्य नमस्कार एक, लाभ अनेक

अनूप कुमार मंडल, अपर महाप्रबंधक (डाऊन स्ट्रीम अनुरक्षण)

सूर्य नमस्कार क्या है?

- सूर्य नमस्कार एक प्रसिद्ध महत्वपूर्ण योगाभ्यास है जो वैदिक काल से चला आ रहा है।
- 'सूर्य' का अर्थ है 'सूर्य भगवान' और 'नमस्कार' का अर्थ है 'प्रणाम' - अतः, सूर्य नमस्कार का सामान्य अर्थ है सूर्य भगवान को प्रणाम। यह मूल रूप से सूर्य के सम्मान में उषा काल में सूर्योदय के समय सूर्य की उपासना के रूप में विकसित किया गया था।
- हिंदू शास्त्रों में, सूर्य देव को जीवन, स्वास्थ्य और ऊर्जा के प्रतीक या स्रोत के रूप में पूजा जाता है।
- सूर्य नमस्कार की उत्पत्ति सूर्य को प्रणाम या नमस्कार की एक श्रृंखला के रूप में हुई है।
- सूर्य नमस्कार 12 आसनों या मुद्राओं या स्थितियों का एक सुंदर क्रम है जो हमारे पूरे शरीर को बहुत व्यवस्थित रूप से सक्रिय करने में सक्षम है।
- रोजाना अभ्यास करने से, यह रीढ़ और जोड़ों में बहुत लचीलापन लाएगा, मांसपेशियों को लचीला बनाएगा, रक्त संचरण में सुधार करेगा, शरीर को ऊर्जावान और मन को शांत रखेगा।
- 1920 में, औंध के राजा, भावनराव श्रीनिवासराव पंत प्रतिनिधि ने अपने छोटे से राज्य (अब महाराष्ट्र का हिस्सा है) के स्कूलों में एक निश्चित सूर्य नमस्कार श्रृंखला शुरू की और एक छोटी सी किताब प्रकाशित की, जिसमें हर पुरुष, महिला और बच्चे से अपने शारीरिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए सूर्य नमस्कार को अपनाने का आग्रह किया गया।

सूर्य नमस्कार के संबंध में एक श्लोक प्रसिद्ध है:

आदित्यस्य नमस्कारान् ये कुर्वन्ति दिने दिने।
आयुः प्रज्ञा बलं वीर्यं तेजस्तेषां च जायते ॥

अर्थ: जो मनुष्य सूर्य नमस्कार प्रतिदिन करते है उनकी आयु , प्रज्ञा, बल, वीर्य और तेज बढ़ता है |

सूर्य नमस्कार के 12 आसन :

सूर्य नमस्कार में 12 आसन किए जाते हैं। आइए जानते हैं कि वे 12 आसन कौन से हैं, उनकी क्रियाएँ और उनसे मिलने वाले लाभ :

(1) प्रणामासन (2) हस्त उत्तानासन (3) हस्तपादासन (4) अश्व संचालनासन (5) पर्वतासन (6) अष्टांग नमस्कार (7) भुजंगासन (8) पर्वतासन (9) अश्व संचालनासन (10) हस्तपादासन (11) हस्त उत्तानासन (12) प्रणामासन

(1) प्रणामासन:

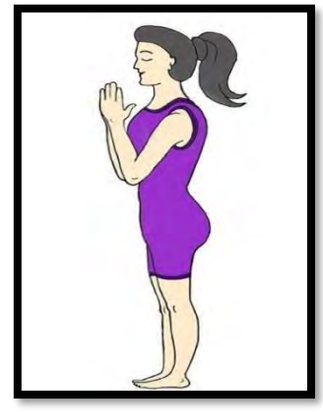

इसे प्रार्थना मुद्रा भी कहा जाता है। इसमें व्यक्ति को खड़े होकर सूर्य भगवान से प्रार्थना करनी होती है।

प्रणामासन करने की पद्धति :

- पहले सावधान की मुद्रा में सीधे खड़ा होना है।
- हाथों को मोड़कर छाती के सामने रखें। (नमस्कार मुद्रा)

प्रणामासन करने के लाभ:

- हमारी एकाग्रता की शक्ति और ध्यान करने की क्षमता बढ़ती है।
- मन को शांत और तनाव (Stress),चिंता , अनिद्रा आदि दूर करता है।
- शरीर में संतुलन को बनाने में सहायता करता है।

(2) हस्त उत्तानासन:

इस आसन में शरीर को ऊपर खींचकर ऊपर उठाना होता है। आइये जानते हैं हस्त उत्तानासन करने की पद्धति और लाभ के संबंध में –

हस्तोत्थानासन करने की पद्धति :

- गहरी सांस भरते हुए दोनों हाथों को सिर के ऊपर उठाएं।
- इसके बाद अपनी गर्दन एवं भुजाओं को थोड़ा पीछे की ओर झुकाना है।

हस्तोत्थानासन करने के लाभ:

- शरीर की त्वचा के रंग को साफ़ करने का काम करता है।
- पेट की मांसपेशियों को मजबूत करने का काम करता है।
- पाचन तंत्र की क्रिया और शरीर में ऑक्सीजन के प्रवाह को सही करता है।
- खराब मुद्रा को ठीक करता है
- पैरों की एड़ीयों से लेकर उँगलियों के सिरे तक की एक्सरसाइज हो जाती है।

(3) हस्तपादासन :

सूर्य नमस्कार के तीसरे आसन का नाम है हस्तपादासन। इसे उत्तानासन के नाम से भी जाना जाता है।

इसे आगे की ओर झुक कर खड़े होना भी कहते हैं।

हस्तपादासन करने की पद्धति:

- हस्तपादासन करने के लिए आप सांस लेते हुए धीरे-धीरे आगे की ओर झुकें।
- इसके बाद घुटनों को आगे एवं नीचे की ओर मोड़ना शुरू करें। ऐसा करते समय आपको अपनी रीढ़ की हड्डी पर जोर लगाते हुए अपने आप को स्ट्रेच करना है।
- इसके बाद आपने हाथों को फर्श या जमीन पर इस तरह से रखने का प्रयास करें कि पंजा जमीनी सतह पर रहे। यदि संभव नहीं हो पा रहा है तो धीरे-धीरे करें। रोजाना थोड़ा-थोड़ा प्रयास करें। जबरदस्ती न करें।
- माथे को घुटनों से स्पर्श कराएँ। यदि संभव नहीं हो पा रहा है तो धीरे-धीरे करें। रोजाना थोड़ा-थोड़ा प्रयास करें। जबरदस्ती न करें।

हस्तपादासन करने के लाभ:

- हस्तपादासन में की गए स्ट्रेचिंग हाथ , पैरों की नसों को खोलती हैं तथा मांसपेशियाँ मजबूत होती हैं।
- पेट की समस्याओं को दूर करने में काफी मददगार होता है।
- हमारे तंत्रिका तंत्र (नर्वस सिस्टम) को मजबूत बनाता है।
- पाचन, रक्त परिसंचरण और श्वसन में सुधार करता है

किनकों नहीं करना चाहिए हस्तपादासन:

जिस भी व्यक्ति को पीठ में दर्द की शिकायत है उन्हें हस्तपादासन नहीं करना चाहिए।

(4) अश्व संचालनासन:

सूर्य नमस्कार के चौथे आसान का नाम है अश्व संचालनासन जिसे एक पाद प्रसारणासन के नाम से भी जाना जाता है।

अश्व संचालनासन करने की पद्धति:

- गहरी साँस लेने के साथ दाएँ पैर को पीछे ले जाते हुए घुटने को नीचे रखना होता है।
- दोनों हाथों को चटाई पर रखना है।
- बायां पैर हाथों के बीच
- सिर पीछे की ओर झुकाते हुए चेहरा छत की ओर उठा हुआ हो।

अश्व संचालनासन करने के लाभ:

- शरीर के खून का संचालन सही होता है।
- पैर और रीढ़ की मांसपेशियां मजबूत होती हैं।
- कंधे एवं छाती को मजबूत करने का कार्य करता है।

(5) पर्वतासन :

सूर्य नमस्कार के पांचवे आसन का नाम है पर्वतासन जिसे चतुरंग दंडासन के नाम से भी जाना जाता है।

पर्वतासन करने की पद्धति:

- अश्व संचालनासन की स्थिति से सांस को धीरे-धीरे छोड़ते हुए बाएँ पैर को पीछे लेकर जाएँ।
- कूल्हों और नितंबों (हिप्स व बुट्स) को छत की ओर ऊपर की ओर उठाएँ। इस अवस्था में अपका पृष्ठ भाग ऊपर उठेगा। अंग्रेजी वर्ण उल्टा वी का आकार बनेगा।
- हाथ सीथे हों और सिर हाथों के साथ हो।

पर्वतासन करने के लाभ:

- शरीर का फैट (fat) कम होता है। इससे आपका वजन कम होता है।
- माँसपेशियों का दर्द दूर होता है।
- निरंतर अभ्यास करने से शरीर का ब्लड सर्कुलेशन सही होता है।

(6) अष्टांग नमस्कार:

सूर्य नमस्कार के छठे आसन का नाम है अष्टांग। अष्टांग का अर्थ है आठ अंग। अष्टांग नमस्कार में केवल आठ अंग अर्थात दोनों पैर, दोनों घुटने, दोनों हाथ, छाती और ठुड्डी जमीन को छूएंगे।

अष्टांग करने की पद्धति:

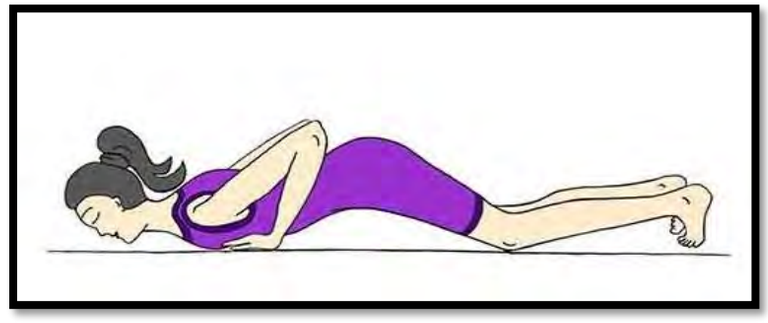

- अष्टांग करते समय आपको सांस छोड़ते हुए अपने घुटनों को नीचे की ओर ले जाना है। इसके बाद अपने सिर को जमीन की तरफ आगे की ओर झुकाते हुए छाती को नीचें ले जाना होता है।
- यह अवस्था आपको ऐसे करनी है जैसे की आप सूर्य भगवान को नमस्कार कर रहे हों।

अष्टांग करने के लाभ:

- शरीर की इम्युनिटी शक्ति में वृद्धि करता है।
- रोज अभ्यास से रीढ़ की हड्डी में लचीलापन आता है।
- रक्त परिसंचरण में सुधार करता है।
- रीढ़ की हड्डी की नसों को पोषण देता है।

(7) भुजंगासन:

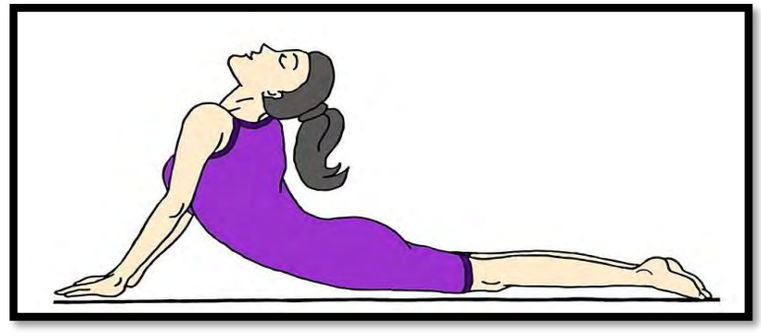

संस्कृत में भुजंग का अर्थ है कोबरा, आसन का अर्थ है मुद्रा । भुजंगासन की अंतिम मुद्रा एक कोबरा जैसी होती है।

भुजंगासन करने की पद्धति:

- अष्टांग नमस्कार आसन से गहरी सांस के साथ धीरे-धीरे सीर को ऊपर उठाएँ।
- शरीर के निचले हिस्से को जमीन के संपर्क में रखें।
- ऊपरी हिस्से दोनों हाथों पर सहारा देते हुए पीछे की ओर झुकाएँ।

भुजंगासन करने के लाभ:

- शरीर को लचीलापन प्रदान करता है।
- कंधे , पीठ , छाती और पैरों की मांसपेशियाँ मजबूत होती हैं।
- तनाव और थकान को दूर भगाता है।

- वजन को कम करने में सहायक है।

(8) पर्वतासन:

सूर्य नमस्कार का आठवां आसन है पर्वतासन। यह पाँचवें आसन के समान ही होता है। भुजंगासन से इस आसन की ओर बढ़ना होता है।

पर्वतासन करने की पद्धति:

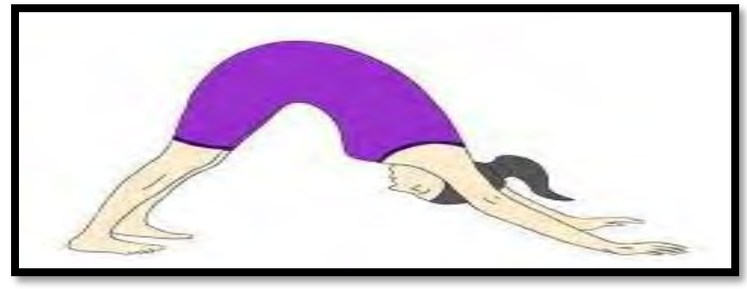

- पर्वतासन करते हुए आपको धीरे-धीरे सांस लेते हुए अपने हाथों और पैरों को जमीन पर रखते हुए अपनी कमर और कूल्हों को ऊपर की ओर उठाना होता है।
- गहरी से साँस छोड़ते हुए, बट और कूल्हों को छत की ओर ऊपर की ओर धकेलें, जैसा कि स्थिति (5) में है। शरीर की अवस्था एक पर्वत की भाँति अर्थात उल्टे V आकार की बनानी होती है।
- भुजाएं सिर के साथ संरेखित रखनी है।

अधो मुख श्वानासन करने के लाभ:

- शरीर का फैट (fat) कम होता है। इससे आपका वजन कम होता है।
- माँसपेशियों का दर्द दूर होता है।
- शरीर का ब्लड सर्कुलेशन सही होता है।

(9) अश्व संचालनासन:

यह आसन सूर्य नमस्कार के चौथे आसन के समान है।

अश्व संचालनासन करने का तरीका:

- गहरी सांस के साथ, दाहिने पैर को आगे शरीर की ओर एक बड़े कदम में लाएं।
- दोनों हाथों को चटाई पर रखना है।
- हाथों के बीच दाहिना पैर
- सिर छत की ओर झुका हुआ

अश्व संचालन करने के लाभ:

- कंधे एवं छाती को मजबूत करने का कार्य करता है।
- शरीर में लचीलापन लेकर आता है।
- शरीर के खून का संचालन सही होता है।
- पैर और रीढ़ की मांसपेशियां मजबूत होती हैं।

(10) हस्तपादासन :

सूर्य नमस्कार का यह दसवां आसन तीसरे आसन के समान ही है।

हस्तपादासन करने की पद्धति:

- आसन 9 (अंश्व संचालन आसन) में रहते हुए, धीरे-धीरे सांस छोड़ते हुए बाहिने पैर को आगे की ओर लेना है।
- इसके बाद घुटनों को आगे एवं नीचे की ओर मोड़ना शुरू करें। ऐसा करते समय आपको अपनी रीढ़ की हड्डी पर जोर लगाते हुए अपने आप को स्ट्रेच करना है।
- इसके बाद आपने हाथों को फर्श या जमीन पर इस तरह से रखने का प्रयास करें कि पंजा जमीनी सतह पर रहे। यदि संभव नहीं हो पा रहा है तो धीरे-धीरे करें। रोजाना थोड़ा-थोड़ा प्रयास करें। जबरदस्ती न करें।
- माथे को घुटनों से स्पर्श कराएँ। यदि संभव नहीं हो पा रहा है तो धीरे-धीरे करें। रोजाना थोड़ा-थोड़ा प्रयास करें। जबरदस्ती न करें।

हस्तपादासन करने के लाभ:

- हस्तपादासन में की गए स्ट्रेचिंग हाथ , पैरों की नसों को खोलती हैं तथा मांसपेशियाँ मजबूत होती हैं।
- पेट की समस्याओं को दूर करने में काफी मददगार होता है।
- हमारे तंत्रिका तंत्र (नर्वस सिस्टम) को मजबूत बनाता है।
- पाचन, रक्त परिसंचरण और श्वसन में सुधार करता है

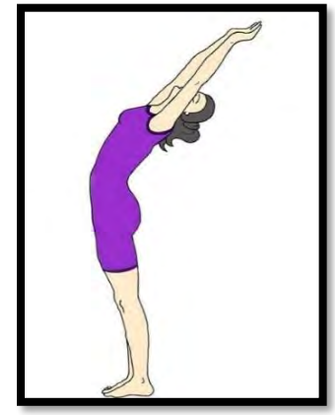

(11) हस्त उत्तानासन:

सूर्य नमस्कार का यह ग्यारहवाँ आसन है जो सूर्य नमस्कार के आसन नं. दो के समान ही है।

हस्त उत्तानासन करने की पद्धति:

- हस्त उत्तानासन करने की क्रिया पूर्णतः सूर्य नमस्कार की द्वितीय चरण की तरह है। इसमें आपको सबसे पहले गहरी सांस लेते हुए अपने हाथों को सर के ऊपर ले जाना होता है।

- इसके बाद आपको ऊपर की ओर देखना है।
- इसके बाद अपनी गर्दन एवं भुजाओं को थोड़ा पीछे की ओर झुकाना है।

हस्त उत्तानासन करने के लाभ:

- शरीर की त्वचा के रंग को साफ़ करने का काम करता है।
- पेट की मांसपेशियों को मजबूत करने का काम करता है।
- पाचन तंत्र की क्रिया और शरीर में ऑक्सीजन के प्रवाह को सही करता है।
- खराब मुद्रा को ठीक करता है
- पैरों की एड़ीयों से लेकर उँगलियों के सिरे तक की एक्सरसाइज हो जाती है।

(12) प्रणामासन या प्रार्थना मुद्रा:

सूर्य नमस्कार का अंतिम चरण है प्रणामासन जो पूर्व में किये गए सूर्य नमस्कार के प्रथम चरण के समान होता है। इस आसन को करते हुए आपको सूर्य भगवान के अनन्तचक्र का ध्यान करना होता है।

सूर्य नमस्कार का यह अंतिम चरण है। प्रणामासन जो पूर्व में किये गए सूर्य नमस्कार के प्रथम चरण के समान होता है।

प्रणामासन करने का पद्धति:

- प्रणामासन करने के लिए आपको सूर्य नमस्कार के प्रथम चरण की भाँति सीधा खड़ा होना है।
- सीधे खड़े होते हुए दोनों हाथों को जोड़कर प्रार्थना की मुद्रा में आना है।

प्रणामासन करने के लाभ:

- हमारी एकाग्रता की शक्ति और ध्यान करने की क्षमता बढ़ती है।
- मन को शांत और तनाव (Stress),चिंता , अनिद्रा आदि दूर करता है।
- शरीर में संतुलन को बनाने में सहायता करता है।

अंततः यह अवश्य कहना चाहेंगे कि

1. सूर्य नमस्कार को 12 आसनों के निरंतर आसन के रूप में किया जा सकता है।

पहेलियाँ

रंग है मेरा हल्का भूरा,
कीट को मैं खाती।
20 मार्च को याद करें सब,
बोलो क्या कहलाती?

शाकाहारी इक पंछी
चोंच है जिसकी लाल।
हरी मिर्च जिसको अति भाए,
तुरंत उसे लो पाल।

फर-फर उड़ता जाऊँ
लोगों की चिट्ठी पहुँचाऊँ।
मैं पंछी हूँ एक निराला,
चार अक्षर से बनने वाला।

उत्तर : चिड़िया, तोता, कबूतर

2. हालांकि, सूर्य नमस्कार क्रिया तब अधिक लाभदायक होती है जब हम सूर्य नमस्कार आसन को निम्न में से किसी एक क्रिया से जोड़ते हैं:
   ए) उचित श्वास
   ख) मंत्र जाप
   ग) चक्रों पर ध्यान केंद्रित करना।

3. बारह सूर्य नमस्कार आसनों में से प्रत्येक में संबंधित श्वास, चक्र और मंत्र नीचे दिए गए हैं:

क्र. सं.	आसन	श्वास	चक्र	सूर्य मंत्र
1	**प्रणामासन**	साँस छोड़ना	**अनाहत**	ॐ मित्राय नमः
2	**हस्त उत्तानासन:**	साँस लेना	**विशुद्धि**	ॐ रवये नमः
3	**हस्तपादासन**	साँस छोड़ना	**स्वाधिष्ठान**	ॐ सूर्याय नमः
4	**अश्व संचालनासन**	साँस लेना	**आज्ञा**	ॐ भानवे नमः
5	**पर्वतासन**	साँस छोड़ना	**विशुद्धि**	ॐ खगाय नमः
6	**अष्टांग नमस्कार**	साँस रोकना (सांस बाहर रोके रखें)	**मणिपूर**	ॐ पूष्णे नमः
7	**भुजंगासन**	साँस लेना	**स्वाधिष्ठान**	ॐ हिरण्यगर्भाय नमः
8	**पर्वतासन**	साँस छोड़ना	**विशुद्धि**	ॐ मरीचये नमः
9	**अश्व संचालनासन**	साँस लेना	**आज्ञा**	ॐ आदित्याय नमः
10	**हस्तपादासन**	साँस छोड़ना	**स्वाधिष्ठान**	ॐ सवित्रे नमः
11	**हस्त उत्तानासन:**	साँस लेना	**विशुद्धि**	ॐ अर्काय नमः
12	**प्रणामासन**	साँस छोड़ना	**अनाहत**	ॐ भास्कराय नमः

4. सूर्य नमस्कार के प्रत्येक आसन के साथ मंत्र जाप अभ्यास को अधिक शक्तिशाली, लाभकारी बनाता है और मंत्र जप और आसन अभ्यास दोनों का लाभ साधकों को मिलता है। मंत्र सूर्य के विभिन्न गुणों को व्यक्त करते हैं जो सकारात्मकता का वातावरण बनाते हैं और हमारे अंदर पूर्णता की भावना पैदा करते हैं। मंत्र हमारे शरीर, मन और आत्मा को एक करने में भी मदद करते हैं।

5. सूर्य नमस्कार के लगातार दो सेटों को एक संतुलित सूर्य नमस्कार सेट बनाना चाहिए। निरंतर दो सेट या तो सीधे हो सकते हैं संतुलित सेट या क्रॉस्ड संतुलित सेटः

(ए) सीधे संतुलित सेट सूर्य नमस्कार:

सीधे संतुलित सेट के पहले सेट में, अश्व संचालनासन में, दाहिने पैर को आगे के आसन में पीछे धकेला जाता है और नौवें आसन में उसी दाहिने पैर को सामने लाया जाता है।

और सीधे संतुलित सेट के दूसरे सेट में, अश्व ऑपरेशनासन में, बाएं पैर को आगे के आसन में पीछे धकेला जाता है और उसी बाएं पैर को नौवें आसन में सामने लाया जाता है।

(बी) क्रॉस बैलेंस्ड सेट सूर्य नमस्कार:

क्रॉस संतुलित सेट के पहले सेट में, अश्व ऑपरेशन में, दाहिने पैर को आगे के आसन में पीछे धकेला जाता है और नौवें आसन में बाएं पैर को सामने लाया जाता है।

और सीधे संतुलित सेट के दूसरे सेट में, अश्व संचालनासन में, बाएँ पैर को आगे के आसन में पीछे धकेला जाता है और नौवें आसन में दाएँ बाएँ पैर को सामने लाया जाता है।

6. सूर्य नमस्कार अनुक्रम की प्रत्येक मुद्रा पहले वाली मुद्रा का प्रतिकार करती है, शरीर को एक अलग तरीके से खींचती है और बारी-बारी से श्वास को नियंत्रित करने के लिए छाती को फैलाती और सिकोड़ती है।
7. आदर्श रूप में सूर्य नमस्कार का अभ्यास जमीन पर कंबल बिछाकर सूर्योदय की ओर मुंह करके किया जाता है। हालाँकि, इसका अभ्यास किसी भी सुविधाजनक समय पर खाली पेट (भोजन के कम से कम 3 से 4 घंटे बाद या शाम के खाने से पहले) किया जा सकता है।
8. आधुनिकता से भरा लोगों का जीवन भाग दौड़ भरा है। शेड्यूल बहुत व्यस्त है और उन्हें अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देने का समय नहीं मिल पाता है। सूर्य नमस्कार उनके लिए वरदान है। यदि सूर्य नमस्कार का प्रतिदिन केवल 15 मिनट अभ्यास किया जाए, तो यह अकेले ही हमारे शरीर को चुस्त और स्वस्थ रख सकता है, हमारे तन-मन और आत्मा को हानि पहुँचाने वाले तत्वों को दूर कर स्वयं को प्रसन्न रखने के लिए उत्प्रेरित करता है।

मिधानि में आयोजित किए गए योग माह पर संक्षिप्त रिपोर्ट

8वें अंतर राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में रक्षा मंत्रालय के अंतर्गत भारत सरकार के उद्यम मिश्र धातु निगम लिमिटेड (मिधानि), हैदराबाद द्वारा दि. 19 मई 2022 से 21 जून 2022 तक "सदा योग करें, सदा स्वस्थ रहें" विषय पर तीन भागों (योग आसनों का अभ्यास, वार्ता तथा योगासन प्रदर्शन प्रतियोगिता) में ऑनलाइन और ऑफलाइन योग माह समारोह का आयोजन संपन्न हुआ।

21 जून 2022 को मिधानि के कर्मचारियों के लिए डॉ. संजय कुमार झा, सीएमडी, मिधानि की मार्गदर्शन में संयंत्र में योग अभ्यास शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर निदेशक (वित्त) श्री गौरी शंकर राव सहित उच्च अधिकारीगण व कर्मचारीगण शामिल हुए। इस अवसर पर डॉ. संजय कुमार झा ने उपस्थित जनसमूह को 8वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की शुभकामनाएँ प्रेषित की। उन्होंने कहा कि शरीर को स्वस्थ रखने के लिए योग बहुत ही उपयोगी उपाय है। जरूरी है कि उत्पादकता को बढ़ाने के लिए सभी कर्मचारी स्वस्थ रहें। शरीर स्वस्थ रहेगा तो मन-मस्तिष्क भी स्वस्थ रहेगा। निदेशक (वित्त) श्री एन गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त) ने कर्मचारियों से आग्रह किया कि नियमित रूप से योग करने से हम निरोगी रह सकते हैं। इससे हमारे दैनिक क्रियाकलाप भी सुचारू रूप से चल सकेंगे।

'आजादी का अमृत महोत्सव' के अंतर्गत आयुष मंत्रालय ने 'अंतर राष्ट्रीय योग दिवस 2022' के 75 दिन योग समारोह के आयोजन की योजना बनाई थी। योग अभ्यास के काऊँट डाऊन के क्रम में रक्षा मंत्रालय को दो दिन 19 व 30 मई 2022 आवंटित किए गए थे। इसका अनुपालन करते हुए मिधानि द्वारा 19 मई 2022 से ऑन लाइन अभ्यास सत्र चलाया गया।

अभ्यास सत्र का उद्घाटन उद्यम के निदेशक (वित्त) श्री एन. गौरी शंकर राव ने किया था। यह सत्र प्रतिदिन सुबह 5.45 से 7.00 बजे तक मिधानि के अपर महाप्रबंधक (डाऊन स्ट्रीम अनुरक्षण) श्री अनूप कुमार मंडल के नेतृत्व में संचालित किया गया। योग अभ्यास के अंतर्गत पाँच चरण रखे गए - ध्यान, योगासन, प्रणायाम, ओमकारगीत तथा हास्यासन। अभ्यास सत्र में मिधानि के कर्मचारियों के अलावा

बीपीडीएवी स्कूल के छात्र व अध्यापक गण तथा देश के विभिन्न राज्यों के नगरों से प्रतिभागियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

दि. 14 जून 2022 को श्री ए रामकृष्णराव, महाप्रबंधक (मानव संसाधन) के नेतृत्व में "सदा योग करें, सदा स्वस्थ रहें" विषय पर वार्ता का आयोजन किया गया। वार्ता में तमिलनाडु फिज़िकल एडुकेशन एंड स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी, चेन्नई की असिटेंट प्रोफेसर डॉ. एस सेल्वालक्ष्मी ने वेबेक्स के माध्यम से "योगा फार वुमेन इन न्यू नॉर्मल", मिधानि के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. पी. वीर राजू ने "डी.ए.एस.एच. (डैश) डायट" और श्री अनूप कुमार मंडल, अपर महाप्रबंधक (डाऊन स्ट्रीम अनुरक्षण) ने "योगः स्वस्थ जीवनम्" विषय पर प्रतिभागियों को संबोधित किया। इसी क्रम में 16 जून 2022 को मिधानि के कर्मचारियों, उनके परिवार के सदस्यों तथा बीपीडीएवी स्कूल के छात्रों के लिए योगासन प्रदर्शन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2022 को 28 प्रतिभागियों को "उत्तम योग प्रदर्शनकर्ता" प्रमाणपत्र से सम्मानित किया गया तथा अन्य प्रतिभागियों को ई-प्रमाण पत्र दिए गए।

अमृत महोत्सव के अंतर्गत कोविड टीकाकरण का शिविर आयोजित

05-08-2022 एवं 26.08.2022 को मिधानि द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत स्थायी, संविदा तथा अनियत अस्थायी कर्मचारी व उनके जीवन साथी के लिए कोविड संबंधी एहतियाती खुराक / तीसरी खुराक के लिए कोविशिल्ड टीकाकरण का शिविर आयोजित किया। इस अभियान का उद्घाटन श्री टी. मुत्तुकुमार, निदेशक (उत्पादन एवं विपणन), मिधानि ने श्री टीजे राव, उ.म.प्र. (प्रशासन), डॉ. पी. वीरा राजू, मख्य चिकित्सा अधिकारी, डॉ. जी. प्रवीण ज्योति, वरिष्ठ प्रबंधक, चिकित्सा और कर्मचारियों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में किया। इन दो शिविरों में लगभग 360 लोगों ने टीकाकरण करवाया।

मिधानि में "बीएलएस (बेसिक लाइफ सपोर्ट) " प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न

मिधानि द्वारा 15.07.2022 को अपोलो, जुबलीहिल्स, हैदराबाद के सहयोग से अपने कर्मचारियों के लिए "बीएलएस (बेसिक लाइफ सपोर्ट)" प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन प्राथमिक चिकित्सा केंद्र मिधानि की देखरेख में किया गया। इस अवसर पर श्री ए. रामकृष्ण राव, महाप्रबंधक, मानव संसाधन, श्री टीजे राव, उप महाप्रबंधक, प्रशासन, डॉ. वीरा राजू, सीएमओ और मिधानि के अन्य चिकित्सा कर्मियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की।

मिधानि ने रवाना किए जेके पुलिस को बीआर वाहन

15.09.2022 को मिधानि के सीएमडी डॉ. एसके झा, डीपीएम श्री टी. मुत्तुकुमार, स्वतंत्र निदेशक श्री वी. चक्रपाणि और प्रो टी. रेमा द्वारा आर्मर यूनिट रोहतक से जेके पुलिस को एलएमवी के लिए नव विकसित बीआर वाहन की पहली खेप भेजी गई। साथ ही हाइड्रोलिक बैलिस्टिक प्रेस एवं आटोक्लेव का उद्घाटन क्रमश: स्वतंत्र निदेशक श्री वी. चक्रपाणि और प्रो टी. रेमा ने किया।

सेवा-भाव

रणजीत सिंह, कनिष्ठ तकनीशीयन-II (रोहतक)

काफी समय पहले जब रणजीत रेल से हैदराबाद से पटना अपने घर जा रहा था। रास्ते में उसे कुछ फेरी वाले बच्चे मिले जो रेलवे स्टेशन पर खाने-पीने की चीजें बेच रहे थे। उनके पैरों में न चप्पल थी और न ही शरीर पर कोई ढंग का कपड़ा।

गर्मी के दिनों में पूरी धूप में जब रणजीत ने उन बच्चों को नंगे पैर अपना सामान बेचने के लिए रेल के साथ-साथ दौड़ते हुए देखा तो उसे मन ही मन इन बच्चों के लिए कुछ करने की प्रेरणा जगी, ताकि ये बच्चे भी अपने बचपन को एक अच्छे तरीके से जी सकें।

रणजीत जैसे ही पटना रेलवे जंक्शन पर उतरा वैसे ही उसने बाजार से कुछ कपड़े, जूते-चप्पल व कुछ खाने का सामान खरीदकर वापस रेलवे स्टेशन पर गया। सुबह का समय था। धूप होने वाली थी, तभी एक बच्चा उसके पास कुछ बेचने के लिए आया। उसने उस बच्चे से कुछ पेंसिलें व एक ब्रेड खरीदा। बच्चे के चेहरे पर हल्की सी खुशी आई। फिर उसने उस बच्चे को कपड़े, चप्पल व 2 बिस्किट के पैकेट दिए। इससे उसके चेहरे की खुशी दोगुनी हो गई लेकिन इसके तुरंत बाद उसने रणजीत को ये सब वापस लौटा दिया और बोला, साहब मेरे माँ-बाप ने मुझे सिखाया है कि मैं अपनी मेहनत से कमाया हुआ ही ले सकता हूँ। इस दृश्य ने रणजीत को झकझोर कर रख दिया। उस बच्चे के अंदर इतना स्वाभिमान देखकर उसे बहुत खुशी हुई। लेकिन उसके बार-बार मना करने के बाद भी रणजीत ने उसे कुछ सामान दिया। रणजीत के बार-बार कहने पर बच्चे ने वे वस्तुएँ ले तो लीं लेकिन उन वस्तुओं के बदले उसने रणजीत को 5 पेन व एक कहानी की पुस्तक दी। यह सब देखकर रणजीत की आँखे भर गईं। (शेष पृ. 44 पर)

कोरोना - हाय तोबा

रोहित निगडकर, उप महाप्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

उत्साह के अतिरेक में, सुबह बना ली चाय ।
गरम चाय को देख कर बीवी दी मुस्काय ।
पहला घूंट पीते ही ऐसे मुह बिचकाया
जैसे ममता दीदी को मोदी का सपना आया ।
बीवी बोली गुर्रा के मामूली चाय बना नहीं पाते हो
जाने तुम मिधानि में काम कैसे कर पाते हो।
मेड़ नही आनी थी तो वर्तन भी हमसे मंजवाए।
कही रह गई दाल तो कहीं साबुन ठीक से न धो पाए।
साबुन से चिकने हाथों से यूँ बरतन भू में मिल जाते थे।
जैसे गहलोत के विधायक कमल देख ललचाते थे।
बीवी बोली हल्के फुल्के दो बर्तन पकड़ नहीं पाते हो ।
जाने तुम मिधानि में काम कैसे कर पाते हो।
माहौल गरम था फिर सोचा खीर पका कर मनाएंगे।
थकी-थकी रूठी बीवी को कुछ तो राहत पहुँचाएंगे ।
घंटो से तप रहे दूध में ऐसे उबाल न आता था
जैसे राहुल के भाषण सुन मतदाता न भरमाता था ।
डोसे के बटर को तुम दूध समझ तपाते हो।
जाने तुम मिधानि में काम कैसे कर पाते हो।
यूँ ही काम बिगाड़-बिगाड़ के जैसे-तैसे बीते दिन सात ।
खत्म हुआ लॉक डाउन और हमने ली राहत की सांस ।
झल्ला गई बीवी जाने - सी एम डी साब कैसे सह जाते हैं
अब तो लगता है हमको भी क्या हम काम ठीक से कर पाते हैं।0

सेवा-भाव...(शेष भाग)

फिर उसने बारी-बारी से हर बच्चे के पास जाकर कुछ-कुछ सामान भेंट किया। उन सभी बच्चों के चेहरे पर एक अलग-सी खुशी दिखाई दी। रणजीत का मन उस दिन बहुत खुश था। फिर उस दिन से ही वह इन बच्चों की खुशी के लिए काम करने लगा। इसके बाद उसने एक एनजीओ के लिए काम करना शुरु किया।

इन बच्चों के प्रति रणजीत के मन में जो सेवा-भाव है, उससे उसे बहुत ही ज्यादा खुशी महसूस होने लगी। उनके कठिन परिश्रम व स्वाभिमान से ही उसे मुख्य रूप से जीवन जीने की प्रेरणा मिली। अब वह अपने साथियों को हमेशा ऐसे बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य के लिए काम करने के लिए प्रेरित करता है, ताकि इन बच्चों को अलगाव की भावना से न जूझना पड़े और ये समाज की मुख्य धारा में आकर देश के विकास में योगदान दे सकें।

हिंदी दिवस 2022 के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मानित करने की झलकियाँ

शब्दावली

मनाली हिंगराजिया, प्रबंधक, आईटी

शब्दावली

रवि कुमार रजक, प्रबंधक, फोर्ज

शब्दावली, वाक्

गरिमा ओझा, सहा. प्र., वित्त

शब्दावली , प्रश्नोत्तरी, निबंध

ईश्वर प्रसाद, प्रबंधक,
वाइड प्लेट मिल

प्रश्नोत्तरी

डी. रतिराम नायक, उ. प्र.,
गुणता प्रबंधन

शब्दावली, प्रश्नोत्तरी

सरस्वती चंद्र , वरि. सहा.,
गुणता प्रबंधन

प्रश्नोत्तरी, वाक्

राज कुमार साहू , मा.तक.सहा.,
यूटिलिटिज़

प्रश्नोत्तरी, वाक्, निबंध

सतीश कुमार कांचीपति, मा.तक.सहा.,
गुणता प्रबंधन

निबंध , वाक्

उमेंद्र सिंह, तक. सहा.,
वा.प्लेट मिल

निबंध

पीयूष पालीवाल, प्रबंधक,
रेफरकटोरी मैटेनेंस

वाक्

लक्ष्मी प्रसन्ना कुप्पिली, उ.प्र.,
आईटी

कार्यालय का दैनिक काम काज हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत वर्ष 2021-22 के लिए पुरस्कार प्राप्त करते हुए कर्मचारियों की झलकियाँ

पी. अंजय्या, वरिष्ठ सहायक, वित्त

एमडी. ए. इमरान, वरिष्ठ प्रबंधक, पीएमओ

आर. अरविंद, वरिष्ठ सहायक, विपणन

पी. सिन्दूषा, प्रबंधक, पीएमओ

एस. रंगा प्रसाद, उप प्रबंधक, पीएमओ

सूजन मण्डल, प्रबंधक, क्रय

सरस्वती चन्द्र, वरिष्ठ सहायक, गुणता प्रबंधन

के. श्रीनिवास राव, एसएसआई, सुरक्षा

आनंद चारी, वरिष्ठ सहायक, भंडार

वी. वेंकटेश, वरिष्ठ सहायक, समय कार्यालय

के. येश्वंत राव, अभियंत-I, सतर्कता

रत्नेश के भट्ट, कार्यालय अधीक्षक, ईएमएस

कार्यालय का दैनिक काम काज हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत वर्ष 2021-22 के लिए पुरस्कार प्राप्त करते हुए कर्मचारियों की झलकियाँ

एम रवि तेजा, उप प्रबंधक, आईटी

एम पुष्पा भवानी, सहायक प्रबंधक, आईटी

बनोथ पुष्पा, उप प्रबंधक, आईटी

मंगलेश कुमार, प्रबंधक, सीआरएम

हिंदी में तकनीकी एवं सृजनात्मक पुस्तक लेखन योजना के अंतर्गत वर्ष 2021-22 के लिए "मिधानि राजभाषा गौरव पुरस्कार"

डॉ. उपेंदर वेन्नम, आईपीओएस को उनके तेलुगु उपन्यास 'मट्टडी दुनिकिन कोपुल नीळ्ळु' के लिए "मिधानि राजभाषा गौरव पुरस्कार" से सम्मानित किया गया।

हिंदी दिवस 2022 के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताओं के निर्णायक व समन्वयकर्ता को सम्मानित करने की झलकियाँ

सत्यनारायण, हिंदी अध्यापक
बीपीडीएवी स्कूल, मिधानि

सावित्री, हिंदी अध्यापक
बीपीडीएवी स्कूल, मिधानि

टी. जे. राव, उप महाप्रबंधक
प्रशासनिक, मिधानि

डी. वी. रत्न कुमारी, अवर कार्यपालक
हिंदी अनुभाग, मिधानि

प्रवीण एस वारद, उप महाप्रबंधक
भंडार, मिधानि

हर घर तिरंगा

मिधानि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. संजय कुमार झा और
निदेशक (उत्पादन एवं विपणन) श्री टी. मुत्तुकुमार राष्ट्रीय ध्वज का अभिवादन करते हुए।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर
परेड के लिए तैयार टीएसपीएफ के जवान।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर
डीएवी स्कूल के छात्र देशभक्ति गीत प्रस्तुत करते हुए।

'हर घर तिरंगा' अभियान के दौरान स्वच्छता कार्यक्रम के अंतर्गत हैदराबाद में स्थित हुसैन सागर के क्षेत्र में
मिधानि के कर्मचारी सफाई करते हुए।

समुद्र की गहराई से अंतरिक्ष तक
From Deep Sea to Space

आज़ादी का अमृत महोत्सव

MIDHANI

मिश्र धातु निगम लिमिटेड

मॉंग अनुसार विशेष धातुओं और मिश्र धातुओं के निर्माण में अग्रणी

हमारे उत्पादों का पोर्टफोलियो

सुपर मिश्र धातु

- निकेल-बेस
- कोबाल्ट-बेस
- आयरन-बेस

टाइटेनियम तथा टाइटेनियम मिश्र धातु

- वाणिज्यिक शुध्द टाइटेनियम
- टाइटेनियम मिश्र धातु

विशेष उद्येश्य स्टील्स

- मारेजिंग स्टील्स
- आर्मामेंट स्टील्स
- नाभिकीय ग्रेड स्टील्स
- विशेष स्टेनलेस स्टील्स

वाणिज्यिक ग्रेड्स

- तेल और गैस श्रेत्र के लिए सुपर मिश्र धातु
- ऑटो क्षेत्र के लिए टूल और डाई
- हेलिकल स्प्रिंग्स और स्प्रिंग राऊंड्स
- खनन क्षेत्र के लिए मिश्र धातु स्टील

विशेष उत्पाद

- टाइटेनियम और सुपर मिश्र धातु इंवेस्टमेंट कास्टिंग्स
- विशेष फास्टनर्स
- वेल्ड उपभोज्य
- आर्मर उत्पाद

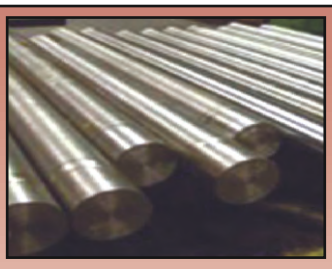
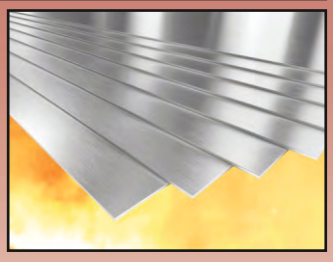

मिधानि आपकी विशेष आवश्यकताओं को पूरा करने के निए हमेशा तत्पर है। अधिक जानकारी के लिए हमसे संपर्क करें:

मिश्र धातु निगम लिमिटेड

पंजीकृत कार्यालय: पोस्ट कंचनबाग, हैदराबाद – 500058, दूरभाष: +91-40-29568519

फैक्स: +91-40-29568527, ई-मेल: mktg@midhani-india.in

www.midhani-india.in